RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 26 जुलाई 2018

# चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका अगस्त 2018

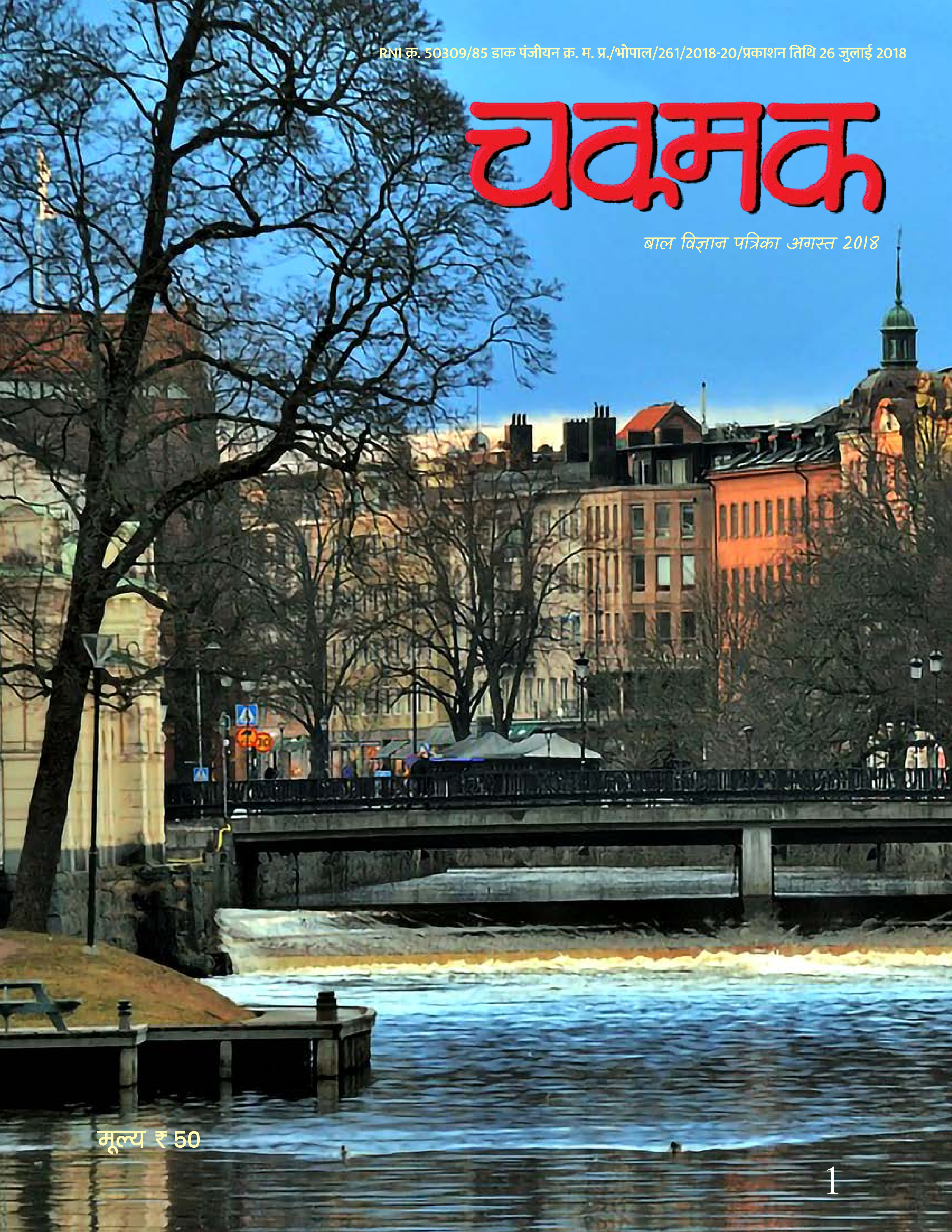

मूल्य ₹ 50

# फेसमोशन्स

पैट्र पान्ज़ार

**यह** सिलसिला आठ साल पहले शुरू हुआ। मैं अपने लिए खाना बना रहा था और अचानक मुझे एक चेहरा दिखा। चीज़-ग्राइण्डर मुझे देख मुस्कुरा रहा था। उस मुस्कुराते हुए ग्राइण्डर की मैंने फोटो ली और फेसबुक पर प्रोफाइल चित्र बना दिया। लोगों ने उसे 'लाइक' किया। फिर क्या - कभी दिन में तीन-चार तो कभी-कभी हफ्ते भर में एक-दो चेहरे दिखने लगे। कभी कोई चेहरा हँसता तो कभी गुस्से में गर्राता। कभी मायूस चेहरा दिखता तो कभी सोच में डूबा चेहरा दिखता। एक साल में मैंने ऐसे 100 से भी ज़्यादा फोटो इकट्ठे कर लिए और उन्हें Instagram पर डालना शुरू कर दिया।

रोज़मर्रा की वस्तुओं में चेहरों को इत्तेफाक से पहचानने का एक नाम भी है - पारईडोलिया। मेरी फोटो को देख मेरे दोस्तों की भी मुलाकात ऐसे चेहरों से होने लगी। वे मुझे इन चेहरों के फोटो भेजने लगे। हम सब को बहुत मज़ा आने लगा।

तुम भी कोशिश करके देखना। एक बार शुरू हो जाओगे तो तुम अपने आप को रोक न पाओगे। Instagram पर हो तो @facemotions ढूँढना। तुम्हें मेरे फोटो मिल जाएँगे। किसी 'चेहरे' का फोटो तुम कभी डालो तो मुझे टैग ज़रूर करना। मैं देख तो लूँ कि तुम दुनिया को एक बदले हुए नज़रिए से कैसे अनुभव कर रहे हो।

अंक 383 अगस्त 2018

# चकमक

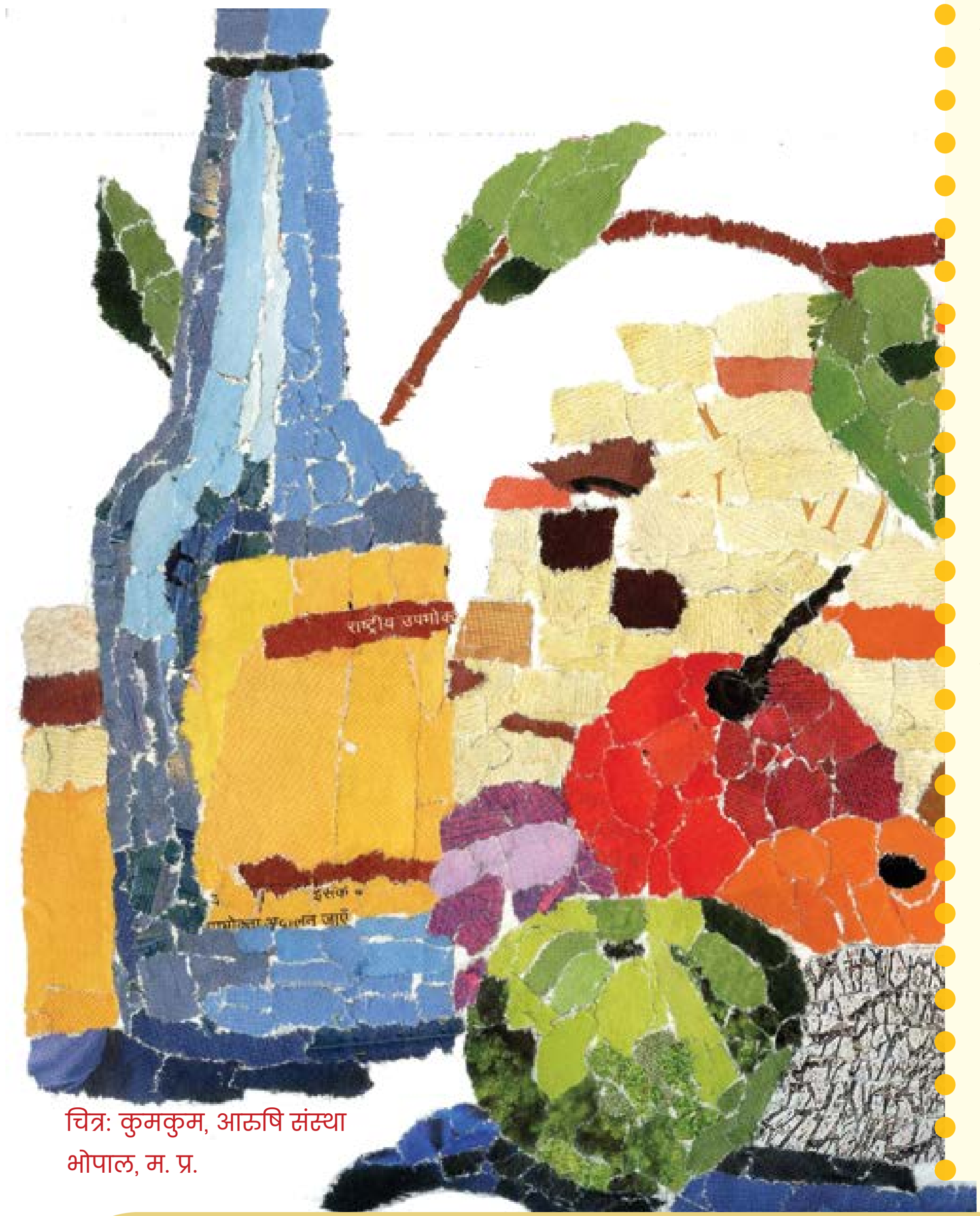

चित्र: कुमकुम, आरुषि संस्था
भोपाल, म. प्र.

## इस बार


| | |
|---|---|
| फेसमोशंस | 2 |
| नदी-प्रेमी, अमृतलाल वेगड़ - राकेश दीवान | 4 |
| प्यारी मैडम - रिनचिन | 5 |
| गणित है मज़ेदार | 8 |
| वो पक्षी जो पूरे भारत में... - जयेश शिन्दे | 10 |
| एडब्बा - सी एन सुब्रह्मण्यम् | 12 |
| गैण्डी-गेंद - अनूप दत्ता | 14 |
| भारत से रूस - सजिता नायर | 16 |
| खज़ाने की खोज - पारुल बत्रा | 19 |
| क्यों क्यों? | 22 |
| एक शहर, दो वैज्ञानिक - चित्रा विश्वनाथन | 24 |
| गिटपिट की हँसी - सन्दीप नाईक | 27 |
| कोमल - गुल सारिका झा | 28 |
| पत्थर की किताब - विनोद कुमार शुक्ल | 29 |
| नीली की नज़र में रक्षाबन्धन | 32 |
| सावन - गिरजा कुलश्रेष्ठ | 33 |
| मेरा पन्ना | 35 |
| तुम भी बनाओ | 39 |
| माथापच्ची | 41 |
| चित्रपहेली | 43 |
| कपड़े सूख रहे हैं - केदारनाथ सिंह | 44 |



**सम्पादन**
विनता विश्वनाथन

**सम्पादकीय सहयोग**
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

**डिज़ाइन**
कनक शशि

**सलाहकार**
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

**विज्ञान सलाहकार**
सुशील जोशी

**वितरण**
झनक राम साहू

**सहयोग**
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म. प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

# नदी-प्रेमी, अमृतलाल वेगड़

राकेश दीवान

अमृतलाल वेगड़
जन्म 3 अक्टूबर, 1928
मृत्यु 6 जुलाई, 2018

किसी से प्रेम करने को हम बोलचाल की भाषा में 'चक्कर में आना' भी कहते हैं। एक नदी से प्रेम करने का क्या मतलब हो सकता है? क्या कोई किसी नदी से इतना प्यार कर सकता है कि वह उसके बार-बार चक्कर लगाना चाहे? अमृतलाल वेगड़ जी एक ऐसे शख्स थे जिन्हें नर्मदा नदी से अपार प्रेम था। वे उस नदी के ही किनारे बसे जबलपुर के रहने वाले थे। 50 साल की उम्र में उन्होंने नर्मदा नदी की पैदल परिक्रमा (परकम्मा) शुरू की और आखिरी परिक्रमा अपने 82वें साल में सम्पन्न की। पिछले महीने 90 साल की उम्र में वे चल बसे। वैसे वेगड़ जी कलाकार थे। उन्होंने कला का अध्ययन शान्ति निकेतन में नन्दलाल बसु जैसे महान कलाकारों के बीच किया था। जब वे नर्मदा की परिक्रमा करते थे तो अपनी स्केचबुक साथ ले जाते थे और जहाँ भी समय मिलता चित्र बनाते रहते थे। उनके लेखन और चित्रों में नर्मदा परिक्रमा के अनगिनत अनुभव दर्ज हैं।

नर्मदा परिक्रमा पर लिखी अपनी पहली किताब *स्त्रोस्वनी नर्मदा* में वे लिखते भी हैं कि नर्मदा उन्हें बुलाती हैं और वे उसके प्रेम में तुरन्त सब कुछ छोड़-छाड़कर परिक्रमा पर निकल पड़ते हैं। नर्मदा उनके लिए एक ऐसी जीवित इकाई थीं जिनके आदेश पर वे कभी भी उनके पास आने को तैयार रहते थे।

वास्तव में देखा जाए तो वेगड़ जी नदी किनारे बसे समाजों की भावनाओं का ही बयान करते थे - ऐसे समाज जो विविध होते हुए भी नर्मदा नदी के प्रति श्रद्धा और प्रेम के कारण आपस में गुँथे हुए हैं।

नदियों के भरोसे जीवन बिताने वाला समाज अकसर नदियों को अपने भीतर भी महसूस करता है। नदियाँ उनके भीतर से प्रवाहित होने लगती हैं। जिस तरह नदी तरलता, दृढ़ता, परिस्थितियों के अनुसार ढलने की तैयारी, सौन्दर्य, लय जैसे अपने गुणों के साथ बहती, बढ़ती है ठीक वैसे ही नदी-तट का समाज भी होता है। अपने और समाज के जीवन की हलचलों को नर्मदा की मार्फत देखने-समझने के चलते वेगड़ जी में भी नर्मदा प्रवाहित होती दिखाई देती है। वेगड़ जी को जानने वाले तस्दीक कर सकते हैं कि उनमें भी नदी के ये गुण देखे जा सकते थे। इन खूबियों की खास बात यह होती है कि इनको धारण करने वाला इंसान अपने आसपास के संसार से नदी की तरह तरलता, लय, सौदर्य और दृढ़ता के साथ संवाद करता है। वेगड़ जी के स्वभाव और लेखन में ये गुण हम हमेशा देख, सुन और समझ सकते हैं। मसलन - उनकी भाषा, ठीक नदी की तरह सरल, लयात्मक और प्रवाहमान है। इसी गुण के चलते आप उन्हें घण्टों सुन सकते हैं।

*सौन्दर्य की नदी नर्मदा* में वे लिखते हैं-

*"सुबह उठकर देखा, घना कोहरा था। नर्मदा-तट गए। घटाटोप कोहरे के कारण आकाश और धरती एकाकर हो गए थे। आकाश मानो धरती पर उतर आया था। कोई घण्टे भर बाद कोहरा छँटा। लेकिन नदी अभी भी स्पष्ट नहीं हुई थी क्योंकि नदी में से भाप उठ रही थी। मैंने देखा भाप सीधी नहीं उठती थी, वलयाकार उठती थी। तन्मय होकर देखता रहा और सोचता रहा। भाप सीधी भी तो उठ सकती थी? इस तरह वर्तुल में लहराती क्यों उठ रही है? भाप ही क्यों, नर्मदा*

*को भी तो कहीं सीधे बहते नहीं देखा। वह भी सीधी रेखा की अपेक्षा वक्रिम रेखा में चलने में ज्यादा सौन्दर्य अनुभव करती है। यही वक्र गति-प्रियता मनुष्य में भी है। यही छन्द में, रंग में, लय में, ताल में ढलकर कला बन जाती है।"*

तीसरे पहर की बात है। नानपाघाट पार कर चुके थे। फूलसिंह, कक्का और दादू आगे थे। मैं थोड़ा पीछे था, रम्मू मेरे साथ था। मैंने कहा, 'रम्मू, आओ, ज़रा नर्मदाजी के प्रवाह को देखें।' पर वह नहीं आया, आगे बढ़ गया। मैं अकेला कगार तक गया, नर्मदा-प्रवाह को एक झलक देखा और वापस पगडण्डी पर आकर आगे बढ़ा।

कोलाज: अमृतलाल वेगड़

# प्यारी मैडम

प्यारी मैडम,

आज हमारे यहाँ कर्मा नाच वाले आए थे और उन्होंने पूरी रात नाचा-गायाजब सुबह का उजाला आने लगा तब तो हम घर में जाकर सोए हैं। उसमें भी कुछ देर मैं लेटकर नाच के बारे में ही सोचती रही। फिर टाइम पर नहीं उठ पाई। इसलिए स्कूल नहीं आई। शाम को एक बार चक्कर लगाया पर तब तक स्कूल बन्द हो गया था। इसलिए चिट्ठी छोड़कर जा रही हूँ। कल आऊँगी।

रिनचिन
मूल कहानी का यह संक्षिप्त रूप है।

प्यारी मैडम,

हैडमास्टर साब तो बोलते रहते हैं कि पढ़े-लिखे लोग ही दुनिया को सुधारेंगे। पर कम्पनीवाले लोग भी तो पढ़े-लिखे हैं, फिर वो हमें परेशान क्यों करते हैं? पापा उस दिन कह रहे थे कि सबसे बड़ा चोर तो पढ़ा-लिखा इंसान है। अनपढ़ तो छोटी-मोटी चोरी ही कर सकता है। बड़ी-बड़ी चोरी तो पढ़े-लिखे लोग करते हैं।

प्यारी मैडम,

मम्मी बाकी लोगों को रैली में चलने को कह रही थी। पर बाकी औरतें कह रही थीं कि काम पे जाना है, पैसा कमाना है। तो वो बोली, “अरे पैसा कमाते-कमाते बाप-दादा मर गए पर उससे क्या बदला है। जैसे थे वैसे ही हैं। अब कुछ और करो। इतिहास रचो।” वो हमेशा ढाँचा तोड़ो, ढाँचा तोड़ो बोलती रहती है, पर मुझसे कुछ टूटता है तो मुझे बहुत डाँटती है।

प्यारी मैडम,

आजकल लोग कहते रहते हैं कि मम्मी को पुलिस उठाकर ले जाएगी। मुझे बहुत डर लगता है। क्या सच में ले जाएगी?

प्यारी मैडम,

आप अपना ध्यान रखना। सुना है आपको बुखार है। दो दिन हमने बहुत मस्ती की। सारे दिन मैदान में खेला। मयंक सर बोले, मैं दो-दो क्लास का ध्यान नहीं रख सकता। तो हमारी स्कूल के अन्दर ही छुट्टी हो गई। मेरी मम्मी तो काढ़ा बनाती है जब हम बीमार पड़ते हैं। आप भी बनाकर पी लेना। जल्दी अच्छे हो जाओगे। पर वापस आराम से आना। पूरे ठीक होने के बाद ही। हमारी फिक्र मत करना। हम मज़े में हैं।

प्यारी मैडम,

क्या रखा है पढ़ाई में? पापा भी यही बोल रहे थे। आप तो कहती हो पढ़ाई करने से हमारा जीवन बदल जाएगा। पर हमारा खेत छिन जाएगा तो हमारा जीवन वैसे ही बदल जाएगा। खेत नहीं रहेगा और सिर्फ पढ़ना आएगा तो हम क्या करेंगे?

प्यारी मैडम,

मैं सच बता रही हूँ, हमारी ज़मीन में कोई तो खदान खोद रहे हैं। हमारी काकी की खुद गई थी तो उन्हें बेचनी पड़ी थी। उनका मन नहीं था बेचने का। मेरी मम्मी बहुत दुखी है।

प्यारी मैडम,

आज 15 अगस्त है। हर जगह गाने चल रहे हैं। हमारे गाँव के कार्यक्रम में पापा जाने से मना कर रहे हैं। बोलते हैं, “आज़ादी झूठी है। उसका कोई फायदा नहीं।” हम तो स्कूल गए थे, झण्डा भी फहराया। कम्पनीवाले आए थे। उन्होंने सब को लड्डू भी बाँटे। मैं लड्डू लेकर घर गई तो पापा ने कहा, “साले पंचायतवाले इन्हीं लड्डुओं पे बिक जाएँगे।” मुझे समझ नहीं आया। लड्डू तो अच्छे लग रहे थे, पर मैंने फेंक दिए। ठीक किया?

प्यारी मैडम,

आज हमारी गाय को बछड़ू हुआ। अजीब से मेहमान भी आ गए। उनके पीछे-पीछे पुलिस भी आ गई। फिर और मेहमान। मेरा पेपर भी अच्छा नहीं गया। जब पुलिस आई तो हम गाय को वापस लेने नहीं जा पाए। तो बछड़ू ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। और तीन और बछड़ू दौड़-दौड़ के अन्दर आ गए। मम्मी बोली, "देख तो संगवारी मन तोर मिलेवार आए हैं।" पुलिसवाले सोचे मम्मी उनसे बोल रही है। तो वो पीछे मुड़कर देखने लगे। सोचा होगा जिनको ढूँढ रहे हैं, वही आ गए। जब बछड़ू को देखा तो हम सब हँसने लगे। कितना अलग दिन था।

प्यारी मैडम,

हमारे घर बहुत पुलिस आने लगी है। लगता है माँ को पकड़ ही लेगी। उस दिन जब धरने से वापस आई तो मैंने उसके लिए उसके पसन्द की सब्ज़ी बनाके रखी थी। फूलगोभी का पत्ता और नया भुनगा उसकी मनपसन्द है। माँ की पायल भी कहीं भागदौड़ में गिर गई। अब मैं पैसा इकट्ठा कर रही हूँ कि मैं उसके लिए बाज़ार से लाऊँगी। नानी जो 100 रुपए दी थी वो मेरे पास हैं। अब 150 और जोड़ना है। मोतीवाला लेना चाहती हूँ। आसानी से गिरेगा नहीं। माँ को पसन्द भी है।

प्यारी मैडम,

आज गाँव में देवों की शादी है। इस बार तो बाहर से तांत्रिक को बुलाया है। उसको बहुत सारा सामान देकर खुश करेंगे। फिर पूछेंगे – सब कुछ ठीक है क्या। क्या कोई गलती हुई है गाँववालों से। कैसे इस सब को ठीक करें। बस मेरे पापा गुस्सा होते रहते हैं। बैगा क्या कर लेगा। मैं बताता हूँ कि क्या लगा है इस गाँव को। कम्पनी की बुरी नज़र लगी है, और कुछ नहीं। उसके लिए तो हमें लड़ना पड़ेगा। बैगा कुछ नहीं कर सकता।

मैडम तुम्हें बैगा गुनिया में विश्वास है क्या। तुम कौन भगवान को मानती हो?

प्यारी मैडम,

काका का कहना है कि जितने पेड़ लगाएँगे तो उतना मुआवज़ा मिलेगा इसलिए हम लोग आज पूरे दिन पेड़ लगाएँगे अपनी बाड़ी में। स्कूल नहीं आऊँगी।

आई डू नॉट कम स्कूल।

मेरी इंग्लिश कैसी लगी?

प्यारी मैडम,

आज तो होली है। मैंने बहुत होली खेली। अभी तक रंग नहीं निकला। कल रँगी हुई ही स्कूल आऊँगी। तुम तो दिन भर छुपी रही। तुम को रंग अच्छा नहीं लगता।

प्यारी मैडम,

मेरी माँ को पुलिस उठाकर ले गई। रात को उसे जेल भेज दिया। हम लोग उसे छुड़ाने जा रहे हैं। मुचलका देना होगा। और तीन को भी उठाए थे वो सब लोग धरने पर बैठे थे। और भी बहुत से लोग थे। पर कह रहे थे कि ये लोग ज़्यादा लेदारी करते हैं इसलिए इनके नाम से रिपोर्ट डलवा दी। अब पेशी, रेंगते-रेंगते ही थक जाएँगे।

प्यारी मैडम,

हमारे गाँववाले अपना केस हार गए हैं। खदान अब हमारी बाड़ी और ज़मीन को खा जाएगी। हमारा घर और बाड़ी दोनों खत्म हो जाएगा। इसलिए अब जितने भी दिन हैं मैं अपनी बाड़ी में दिनभर रहना चाहती हूँ। स्कूल नहीं आऊँगी।

प्यारी मैडम,

हमारे पड़ोसी जा रहे हैं, उन लोगों ने दूसरी जगह ज़मीन ले ली है। पापा-मम्मी तो यहीं रहकर लड़ेंगे कह रहे हैं। तो हम यहीं रहेंगे।

प्यारी मैडम,

ब्लास्टिंग से हमारी बाड़ी का बोर ज़मीन में धँस गया है। कल पूरे दिन हम सब उसे निकालने में लगे थे। बाहर निकाला तो चलना बन्द हो गया। पापा इतने नाराज़ थे, पुलिस में एफआईआर डालने चले गए। पुलिसवाले उस पर हँसने लगे। पर हम लोग भी वहाँ से तब तक नहीं आए जब तक उन्होंने लिखा नहीं। वापस आकर जब वकील दीदी को दिखाई तो वो बोली कि ठीक से नहीं लिखा। पापा पढ़े-लिखे लोगों को फिर से गाली देने लगे।

प्यारी मैडम,

आम का मौसम आ गया है। पर इस बार हमारे गाँव में आम के पेड़ तो आधे कट ही गए। पहले तो लोग जो मर्ज़ी ले जाते थे। अब लोग थोड़े कंजूस हो गए हैं। थोड़े-थोड़े देते हैं। इस बार हमने अचार ही नहीं डाला। आम कम थे। इसलिए तुमको थोड़ा-सा ही दे रही हूँ। खाके बताना, कैसा लगा।

प्यारी मैडम,

इतने दिन मैं स्कूल नहीं आई। क्या मेरी याद नहीं आती तुमको? मुझे आती है। अब तो तुम दूसरे बच्चों को ज़्यादा प्यार करती होगी।



# पैटर्न

हम तरह-तरह के पैटर्न देखते हैं और बनाते भी हैं। रंगोली, कढ़ाई, स्वेटर बुनाई... इन सब में पैटर्न का उपयोग होता है। एक खास तरह की आकृति या बात को किसी नियम के अनुसार जमाने से पैटर्न बनते हैं। उदाहरण के लिए जब हम खाने में छौंक लगाते हैं उसमें एक पैटर्न देखा जा सकता है। पहले तेल या घी गरम किया जाता है फिर उसमें फूटने वाले दाने (राई, सरसों, मेथी, जीरा वगैरह) डाले जाते हैं और बाद में हींग और सब से बाद में हरी मिर्ची या सब्ज़ी। यह एक पैटर्न है। या फिर खाना परोसने में सबका अपना-अपना पैटर्न होता है।

कई पैटर्न ऐसे हैं जिनका नियमबद्ध तरीके से दोहराव होता है।

इसी तरह नीचे कुछ आकृतियाँ दी गई हैं। इनमें भी एक पैटर्न है। क्या तुम पहचानकर इसे आगे बढ़ा सकते हो। और इसका नियम क्या है यह भी बताना।

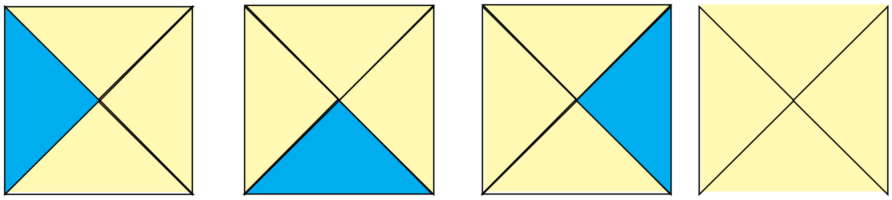

संख्याओं में पैटर्न खोजना आसान है।

उदाहरण के लिए- 0 2 4 6 8 10 ...

तुम तुरन्त बता सकते हो कि हर संख्या में दो जोड़ने पर अगली संख्या बनेगी।

# गणित है मज़ेदार!

अब इन संख्याओं को देखकर बताओ इनमें क्या पैटर्न है?

1 4 9 16 25 36 49 64...

पहली नज़र में लगता है कि इसमें कोई पैटर्न नहीं है। मगर ध्यान से देखो तो पता चलेगा कि इन संख्याओं के पीछे कुछ नियम हैं।

1x1 = 1

2x2 = 4

3x3 = 9

4x4 = 16

5x5 = 25

6x6 = 36

एक बार फिर इन संख्याओं को देखो -

0 1 4 9 16 25 36 49 64

हर दो संख्या के बीच के अन्तर को लिखो। जैसे 0 और 1 के बीच का अन्तर 1 है। 1 और 4 के बीच का अन्तर है 3, 4 और 9 के बीच का अन्तर है 5...

1 3 5 7 9 11 13...

जाहिर है ये विषम संख्याओं का क्रम है।

इन संख्याओं के बीच के अन्तर देखो तो पाओगे कि सारी संख्याओं के बीच 2 का ही अन्तर है।

तो 0 1 4 9 16 25 36 49 64... पैटर्न का नियम क्या है?

यह कहा जा सकता है कि 0 से शुरू करके – क्रम से हर संख्या को उसी से गुणा करना इस पैटर्न का नियम है।

इसे दूसरे तरीके से भी कहा जा सकता है - 0 से हर संख्या में क्रम से विषम संख्या जोड़ना इस पैटर्न का नियम है।

अब हम और संख्या पैटर्न भी खोज सकते हैं।

2 4 8 16 32 64 128 256...

कुछ दिमाग लगाओ तो समझ में आ जाएगा कि हर संख्या पहली संख्या की दुगुनी है।

इसे इस तरह भी कह सकते हैं

$2^1$ $2^2$ $2^3$ $2^4$ $2^5$ $2^6$ $2^7$

इनमें एक और मज़ेदार बात है। इन संख्याओं के आखरी अंक को देखो – 2 4 8 6 2 4 8 6...

आखरी अंक 2 4 8 6 रिपीट होते चला जाता है।

इसी को हम अभी 3 के साथ करके देखते हैं कि क्या होता है।

$3^1$ $3^2$ $3^3$ $3^4$ $3^5$ $3^6$ $3^7$

(3, 3x3, 3x3x3, 3x3x3x3, 3x3x3x3x3...)

3 9 27 81 243 729 2187 6561...

इनके आखरी अंक को देखो – 3 9 7 1 3 9 7 1... यानी 3 9 7 1... यह सिलसिला चलते रहता है।

एक और पैटर्न है जिसका उपयोग सब बच्चे 9 का पहाड़ा याद रखने के लिए करते हैं।

9x1 = 9

9x2 = 18

9x3 = 27

9x4 = 36

9x5 = 45

9x6 = 54

9x7 = 63

9x8 = 72

9x9 = 81

9 18 27 36 45 54 63 72 81

इनके इकाई वाले अंक को देखो –

9 8 7 6 5 4 3 2 1

इसी तरह दहाई वाले अंक देखो

1 2 3 4 5 6 7 8...

शैलेश शिराली के पुस्तक *अ प्राइमर ऑन नम्बर सीक्वेन्सस्* (2004, यूनिवर्सिटीज़ प्रेस) पर आधारित।

# वो पक्षी जो पूरे भारत में मानसून की बारिश लाता है

जयेश शिन्दे

कहते हैं कि प्यासे चातक पक्षी की गुज़ारिश पर ही बादल बरसते हैं और यह कि उसके पास यह जादुई क्षमता होती है कि वह जहाँ भी जाता है वहाँ बारिश करवा सकता है। सदियों से इस उप महाद्वीप के लोग मानते रहे हैं कि चातक, जिसे हम पपीहा भी कहते हैं, के दिखने और बारिश के मौसम की शुरुआत के बीच गहरा सम्बन्ध है।

चातक के बारे में प्रचलित ये धारणाएँ सिर्फ कपोल-कल्पनाएँ नहीं हैं। आधुनिक टेक्नोलोजी और पक्षी अवलोकन की मदद से चातक और बारिश के इस रिश्ते की पुष्टि हुई है। नेचर कंज़र्वेशन फाउण्डेशन (एनसीएफ) के शोधकर्ताओं ने गूगल अर्थ की मदद से यह काम किया है। इसके लिए उन्होंने भारत में चातक की उड़ान पर नज़र रखी और फिर उसे बारिश के आगमन के तरीकों के साथ जोड़कर देखा।

## मानसून का मेहमान

पहले चातक के बारे में कुछ बातें हो जाएँ। भारत में दो किस्म के चातक या 'पाइड क्रैस्टेट कुकू' दिखते हैं। एक जो दक्षिण भारत और श्रीलंका के स्थाई वासी हैं। दूसरे जो ठण्ड के महीनों में दक्षिण अफ्रीका में रहते हैं और गर्मियों में अरब सागर पार करके भारत में प्रजनन के लिए आते हैं। यानी यह एक प्रवासी पक्षी है। मई-जून में चातक मध्य और उत्तर भारत में दिखने लगते हैं, सुनाई देने लगते हैं। लगता है कि ये अरब सागर और हिन्द महासागर को मानसून की हवाओं की मदद से पारकर अफ्रीका से भारत पहुँचते हैं।

शायद तुम जानते होगे कि गर्मी में हिन्द महासागर से भारत की ओर मानसूनी हवाएँ चलने लगती हैं और अक्तूबर के बाद भारत से हिन्द महासागर की ओर उलटी दिशा में हवाएँ बहने लगती हैं।

एनसीएफ के वैज्ञानिक एम डी मधुसूदन कहते हैं कि चातक पक्षी के प्रवास पर नज़र रखने के लिए बस एक दूरबीन और एक स्मार्टफोन की ज़रूरत पड़ती है। तुम भी दूरबीन से पक्षियों को देखकर अपने स्मार्टफोन पर ईबर्ड एप (www.ebird.org) में आसानी से दर्ज कर सकते हो। भारत में सैकड़ों आम लोग हैं जो यह काम अपने छत, बगीचे, पार्क या पास के जंगल से करते हैं। इन 'सिटीज़न साइंटिस्टों' द्वारा दर्ज रिकार्ड में चातक पक्षी

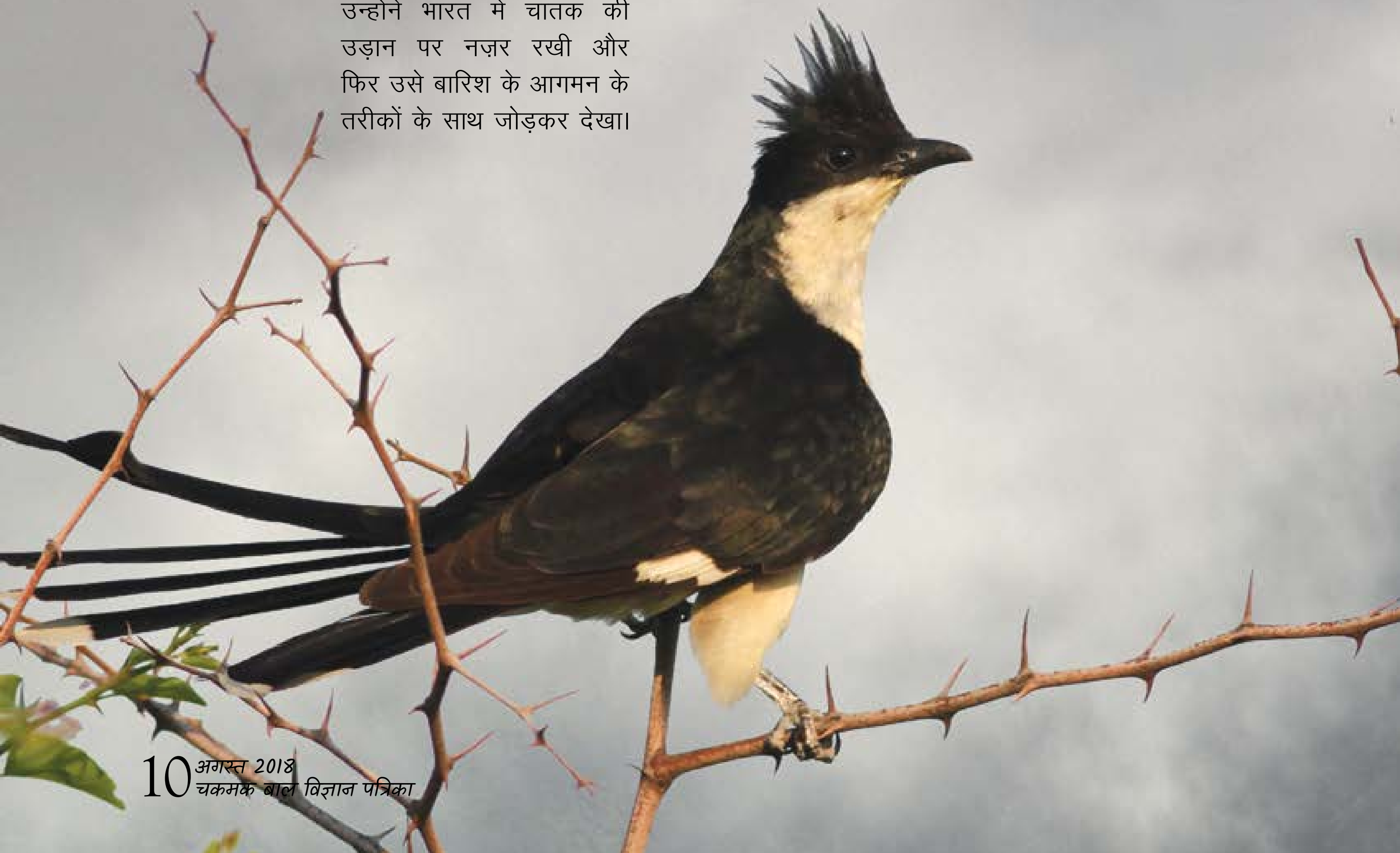

के रिकार्ड भी शामिल हैं। चूँकि ये सिटीज़न साइंटिस्ट अपने-अपने इलाकों में लगातार बर्ड वॉचिंग करते हैं इसलिए सालभर वहाँ चातक कब दिखा और नहीं दिखा जैसी जानकारियों के रिकार्ड मिल जाते हैं। मधु जी ने समझाया कि लम्बे समय के दौरान विभिन्न जगहों पर चातक पक्षियों की उपस्थिति की रूपरेखा बनाने के लिए उन्होंने लगभग 10,000 रिकार्डों का उपयोग किया। इन रिकार्डों को सैकड़ों सिटीज़न बर्ड वॉचर ने लगातार और नियमित रूप से ईबर्ड एप में दर्ज किया है।

जब इस तरह के साझे प्रयास में बड़ी संख्या में लोग नियमित रूप से भाग लेते हैं तो पक्षियों के प्रवास के समय और उसकी प्रगति का पता लगाना भी सम्भव हो जाता है।

## चातक के प्रवास के पैटर्न का मानसून से नाता

एनसीएफ ने 'गूगल अर्थ आउटरीच' का इस काम के लिए इस्तेमाल किया। गूगल अर्थ सैटेलाइट द्वारा ली गई तस्वीरों और अन्य डाटा की मदद से मानसूनी हवाओं की प्रगति का नक्शा बनाता है। इन नक्शों का ईबर्ड द्वारा तैयार किए गए चातक पक्षी के प्रवासी पैटर्न के आँकड़ों से मिलान किया गया। वे इन नक्शों में जहाँ चातक पक्षी दिखाई देता है, उसके बाद ठीक उन्हीं स्थानों पर हुई मानसून की बारिश से जोड़ने की कोशिश कर रहे थे। पूरे भारत में मानसून प्रसार की सटीक तस्वीर बनाने के लिए पिछले लगभग 40 सालों की बारिश के आँकड़ों का नक्शा तैयार किया गया।

चातक पक्षी की उपस्थिति के रिकार्ड और मानसून की बारिश के तीन नक्शों को तुम नीचे देख सकते हो। ये अलग-अलग तरीके के हैं। इनमें काली बिन्दियाँ वो जगह हैं जहाँ चातक दिखाई दिए और लकीरें मानसून के आगमन को बताती हैं। अगर तुम इन्टरनेट पर इस साईट पर जाओ तो एक वीडियो में इसी बात को देख सकते हो - http://www.migrantwatch.in/blog/2011/07/16/pied-cuckoo-animated-map/

मार्च व अप्रैल में चातक के लगभग सारे रिकार्ड दक्षिण भारत से हैं। ये दक्षिण भारत के चातक हैं जो प्रवास नहीं करते। मई के तीसरे हफ्ते में पश्चिम और पूर्वोत्तर में प्रवासी चातक के पहले रिकार्ड दिखने लगते हैं। मानसून जैसे ही अण्डमान पहुँचता है उत्तर भारत में चातक दिखाई देने लगते हैं। इसके बाद पश्चिम, उत्तर और पूर्व भारत में चातक की संख्याएँ बढ़ने लगती हैं। जब तक मानसून केरल पहुँचता है, चातक हर कहीं नज़र आने लगते हैं। नक्शे देखकर तो ऐसा लगता है कि मानसून का प्रसार उन्हीं स्थानों पर होता है जहाँ चातक पक्षी दिखाई दिए थे।

जब मैंने मधु जी से पूछा कि ऐसे कौन-से कदम उठाए जाने चाहिए जिनसे आने वाली पीढ़ियाँ भी चातक की इस किंवदन्ती का आनन्द ले सकें, तो उन्होंने कहा, "जब पर्याप्त संख्या में लोग किसी चीज़ के बारे में जानकारी रखते हैं, परवाह करते हैं तो अच्छी चीज़ें होना शुरू हो सकती हैं। जैसे कि यह सुनिश्चित करना कि चातक जैसे अजूबे हमारी धरती से मिट न जाएँ।"

इण्डियाटाइम्स के टेक्नोलोजी पेज पर 20 जून 2018 को प्रकाशित लेख पर आधारित।

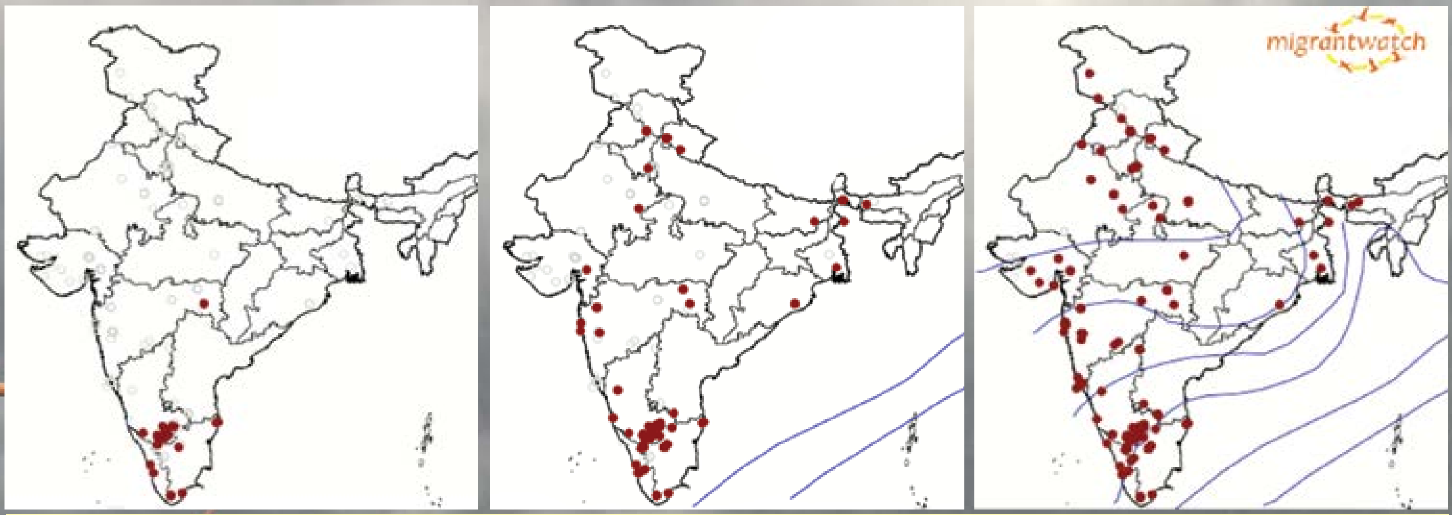


मई के शुरु में | मई के अन्त में | जून के अन्त में

3750 साल पुराना सुमेरियन स्कूल

# एडुब्बा

सी एन सुब्रह्मण्यम

### *“डुमु एडुब्बा उआ उल लाला अम मे से एडुडेएन”*
### *“एडुब्बा आ से एडुडेएन”*

*“स्कूल के लड़के, शुरू के दिन तुम कहाँ गए थे?”*

*“मैं तख्ती-घर (स्कूल) गया था।”*

*“तुमने स्कूल में क्या किया?”*

*“मैंने अपनी मिट्टी की तख्ती पढ़ी, लंच खाया, अपनी तख्ती बनाई, उस पर लिखकर समाप्त किया।...*

*...शाम को स्कूल छूटने पर मैं घर गया, घर में घुसते ही देखा कि पापा बैठे हैं।*

*मैंने पापा को अपने लेखन के बारे में बताया और उन्हें अपनी तख्ती दिखाई। पापा खुश।”*

*“मैं प्यासा हूँ, मुझे कुछ पीने दो, मैं भूखा हूँ, मुझे रोटी दो, मेरे पाँव धो, बिस्तर तैयार करो, मुझे सोना है। सुबह मुझे जल्दी जगाओ, मुझे लेट नहीं होना है, वरना शिक्षक संटी से मारेंगे।”*

**यह** कथन है एक स्कूल के छात्र का जो आज से लगभग 3750 साल पहले इराक देश में पढ़ता था। उन दिनों दुनिया के बहुत कम इलाकों में स्कूल थे। गिने-चुने शहर थे जहाँ पढ़ने-लिखने व हिसाब-किताब रखने का काम होता था।

वहीं कुछ स्कूल भी थे जहाँ कुछ लड़के पढ़ने जाते थे। इराक, जिसे उन दिनों सुमेरिया कहा जाता था, में कागज़ का उपयोग नहीं होता था, न ही उनके पास स्लेट तख्ती थी। वे चिकनी मिट्टी की तख्ती बनाते थे और गीली तख्ती पर कील या काँटा चुभोकर लिखते थे। फिर इसे सुखाकर सुरक्षित रखा जाता था। स्कूल में गीली तख्ती पर लिखा जाता था ताकि उसे मिटाकर साफ करके फिर से अभ्यास के काम में लाया जा सके। कुछ तख्तियाँ प्रिज़्म आकार की थीं, यानी तीन तरफ वाली - एक में शिक्षक पाठ लिखकर देते थे और बाकी दोनों तरफ छात्र उसकी नकल करते थे। मज़े की बात यह है कि हज़ारों साल गुज़र जाने के बाद आज भी इनमें से बहुत-सी तख्तियाँ सुरक्षित हैं और हम उन्हें पढ़कर देख भी सकते हैं। हाँ, इसकी लिपि और भाषा अलग है - भाषा है सुमेरियन और लिपि है क्यूनिफार्म (कीलाकार)।

यह छात्र अगले दिन स्कूल गया तो बेचारा बहुत पिटा। सात अलग-अलग लोगों ने इसे अलग-अलग कारणों से पीटा। इस पिटाई के बारे में वह कहता है -

*जब मैं सुबह जल्दी उठा मैं माँ को देखकर बोला, "मेरा लंच दो, मुझे स्कूल जाना है।" माँ ने मुझे दो रोटी रोल दिया और मैं स्कूल चला। तख्ती-घर (स्कूल) में बड़े भैया (मानीटर) ने मुझसे कहा, "तुम लेट क्यों आए?" मैं डरा था और मेरा दिल तेज़ी-से धड़कने लगा। मैं मेरे स्कूल-पिताजी (शिक्षक) के सामने अपनी जगह पर बैठ गया।*

*शिक्षक ने मेरी तख्ती पढ़कर सुनाई और बोले, "देखो यह कटा है", उन्होंने मुझे संटी मारी।*

*फिर लंच हुआ।*

*वह शिक्षक जो सड़क और घर पर नज़र रखते हैं ने मुझे दबोचा और कुछ कारण बताकर मुझे संटी मारी।*

*मेरे शिक्षक मेरी तख्ती लाए और कहा कि किसी शान्त कोने में लिखो।*

*फिर एक शिक्षक आए और कहा, "जब मैं नहीं था तुमने बात की थी" और संटी मारी।*

*एक और शिक्षक ने कहा, "जब मैं नहीं था तुमने सिर ऊपर नहीं रखा" और संटी मारी।*

*फिर चित्रकारी के शिक्षक ने कहा, "जब मैं नहीं था तुम खड़े क्यों हुए?" और संटी मारी।*

*जो दरवाज़े पर पहरा देते थे उन्होंने कहा, "जब मैं नहीं था तुम बाहर गए" और संटी मारी।*

*एक और शिक्षक ने मुझे कहा "जब मैं नहीं था तब तुम ने क्या चोरी की" और संटी मारी मारा।*

*सुमेरियन शिक्षक ने कहा, "तुम बोले" और संटी मारी।*

*मेरे शिक्षक बोले, "तुम्हारे हाथ की लिखाई ठीक नहीं है" और संटी मारी।*

दुखी लड़के का मन पढ़ाई-लिखाई से उठ गया। वह खोया-खोया सा लगने लगा। एक दिन उसके मन में एक आईडिया आया। लड़के ने पिताजी से अनुरोध किया कि शिक्षक को घर बुलाकर उनकी खातिरदारी की जाए, जिस पर पिताजी सहमत हो गए।

शिक्षक को स्कूल से लाया गया और घर पर सम्मानित आसन पर बिठाया गया। छात्र लड़का उनके सामने बैठा और लेखन के बारे में जो सीखा था, बताया।

*पिताजी खुश होकर स्कूल पिताजी से बोले, "आपने मेरे बच्चे का हाथ खोला है*

*और उसे एक एक्सपर्ट बना दिया और उसे लेखन कला की बारीकियाँ सिखा दीं। आपने उसे गिनती और हिसाब भी सिखाया...”*

*इनके लिए अच्छी शराब लाओ, इनके लिए तेल पानी की तरह बहाओ और इन्हें नए कपड़ों से सजाओ, इन्हें तोहफे दो और इनके हाथ पर एक पट्टा बाँधो।”*

*जब यह सब किया गया खुश होकर शिक्षक बोले - “बरखुरदार, तुमने मेरी बातों को भुलाया नहीं न उन्हें टाला। तुम लेखन कला की शीर्ष पर पहुँचोगे। तुमने मुझे वह दिया जो तुम्हें देना ज़रूरी नहीं था, तुमने मुझे अपने वेतन से अधिक तोहफे दिए और सम्मानित किया। देवियों में से प्रमुख, निडबा, तुम्हारी रक्षा करे...*

*तुम अपने भाइयों से और सहपाठियों से आगे निकलोगे, और तख्ती-घर के सबसे प्रमुख छात्र बनोगे। ...*

*तुमने स्कूल के सब काम अच्छे से किए हैं, और विद्वान बन गए हो।*

*निडबा, ज्ञान की देवी को तुमने खुश किया है।”*

*निडबा की प्रशंसा हो...*

# गैण्डी-गेंद

अनूप दत्ता

**बारिश** में फुटबॉल खेलने से ज़्यादा मज़ेदार क्या बात हो सकती है! ढेर सारा कीचड़, पानी से भरे मैदान, ज़रूरत सिर्फ एक गेंद की होती है। लेकिन बारिश में फुटबॉल खेलने के लिए बैगा नौजवान ‘गैण्डी’ (पैरबासा / stilt) का इस्तेमाल करते हैं। बैगा जनजाति के लोग मध्यप्रदेश के मण्डला ज़िले में रहते हैं। उनके लिए गैण्डी-गेंद का खेल ही बारिश का फुटबॉल है।

गैण्डी-गेंद को कम से कम चार और दर्ज़न भर से भी ज़्यादा खिलाड़ी खेल सकते हैं। दो टीमें बनाई जाती हैं। राख से बीच मैदान में एक लकीर खींची जाती है। खिलाड़ी इस लकीर के दोनों तरफ फैल जाते हैं। दोनों तरफ गोल भी बना लेते हैं लेकिन गोलपोस्ट यानी खम्भे नहीं फँसाए जाते। अब खेल शुरू। लेकिन फुटबॉल जैसे मैदान में दौड़ नहीं सकते हैं। खेल के दौरान पैरों पर चलना मना है, पूरा समय गैण्डी पर ही अपना सन्तुलन बनाए रखना होता है और गेंद को सिर्फ गैण्डी से मार सकते हैं।

एक अनोखी बात है कि गैण्डी-गेंद को खिलाड़ी चुपचाप खेलते हैं। कोई हल्ला नहीं, एक-दूसरे से बात तक नहीं करते हैं। गैण्डी की टक-टक की आवाज़ ही सुनाई देती है। गैण्डी को जहाँ पकड़ते हैं उसे पोहा-पोहली कहते हैं। खिलाड़ी गैण्डी के पोहा-पोहली को बजाते रहते हैं, कभी-कभी यह इशारा करने के लिए कि गेंद उनकी तरफ मार दी जाए। जिस टीम के सबसे ज़्यादा

गोल, वही टीम जीतती है। खेल की कोई खास समय-सीमा नहीं - जितना समय चाहे खेल लो। सूरज के ढलने पर या फिर दोनों टीम की सहमति से खेल खतम हो जाता है।

गैण्डी-गेंद तब खेला जाता है जब बारिश इतनी हो जाती है कि कीचड़ में चलना मुश्किल हो जाता है। जितना ज़्यादा पानी या कीचड़, खेलने में उतना ही मज़ा!

बैगा गैण्डी और गेंद दोनों खुद बनाते हैं। बारांगा या सराई पेड़ के लम्बे लट्ठों से गैण्डी बनती है। इस पर पैर टिकाने के लिए मेहिलीन और सान पेड़ों की टहनियों को एक-दो फुट की ऊँचाई पर बाँध दिया जाता है। खिलाड़ी इन टहनियों पर बागमुखी और कथुआ पौधों की फल-फली बाँधते हैं। खेल के दौरान गैण्डी पर चलते-झपटते इन फलों के बीज खनकते हैं।

गैण्डी-गेंद की गेंद हॉकी-फुटबॉल की गेंदों से अलग होती है। ये फल-बीज, घास-पत्तों से बनी होती है। हर्रा या बहेड़ा के फलों को लिया जाता है। हर्रा के फलों को लम्बी घास से पूरी तरह ढँक दिया जाता है। फिर इसे बड़ की हवाई जड़ों या फिर मेहलयान पेड़ की छाल से लपेटा जाता है। इन सबको दबाकर एक गोलाकार गेंद बनाई जाती है। गेंद में हर्रा खनकते रहते हैं।

ये रही हमारी अपनी फुटबॉल या यूँ कहें - गैण्डी-बॉल। चुपचाप टक-टक और खन-खन की आवाज़ों के बीच एक खेल ऐसा भी।

**फोटोग्राफ - अनूप दत्ता**

# भारत से रूस

## कैसे पहुँची 11-साल की नतानिया?

सजिता नायर

**अगर** मैं तुमसे कहूँ कि फीफा वर्ल्ड कप 2018 में भारत ने भी मैदान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तो क्या तुम मेरा विश्वास करोगे? नहीं? मुझे पता है तुम विश्वास नहीं करोगे क्योंकि भारतीय टीम तो कोई मैच खेलते दिखाई नहीं दी। चलो मैं तुमको बताती हूँ कि ये कैसे हुआ। तुमने मैचों की शुरुआत में देखा होगा कि दोनों टीमों के खिलाड़ी रैफरी, प्लेयर ऐस्कॉर्ट और ऑफिशियल मैच बॉल कैरियर (ओएमबीसी) के साथ मैदान में दाखिल होते हैं। प्लेयर ऐस्कॉर्ट जो खिलाड़ियों के हाथ पकड़कर और ओएमबीसी जो मैच की बॉल लाते हैं दोनों बच्चे होते हैं। इस बार भारत से भी 11 साल के दो बच्चों को ओएमबीसी बनकर फीफा वर्ल्ड कप का हिस्सा बनने का मौका मिला। बेल्जियम और पनामा के बीच 18 जून को हुए मैच में बेंगलुरु के ऋषि तेज ओएमबीसी थे, जबकि नीलगिरीज़ की नतानिया जॉन 22 जून को ब्राज़ील और कोस्टारिका के बीच हुए मैच में ओएमबीसी बनी।

इन दोनों ने ओएमबीसी बनने के लिए भारत के 1598 दूसरे फुटबाल खिलाड़ी बच्चों के साथ एक प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था। ऋषि और नतानिया सहित 50 बच्चों ने पहला राउण्ड पार किया। अगले चरण के लिए वे गुड़गाँव पहुँचे जहाँ ये सभी अलग-अलग परीक्षाओं से गुज़रे। इनका फैसला किया सबसे ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय गोल करने वाले मौजूदा खिलाड़ियों की सूची में तीसरे स्थान पर भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री ने। ऋषि और नतानिया बाकी प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए फीफा वर्ल्ड कप में भारत की तरफ से भाग लेने वाले पहले बॉल कैरियर बने।

नतानिया आँध्र प्रदेश के चित्तूर ज़िले में स्थित ऋषि वैली स्कूल में सातवीं क्लास में पढ़ती है। जब मैंने उससे पूछा कि अगर उसे एक शब्द या एक वाक्य में खुद के बारे में कहना हो तो वह क्या होगा तो उसने तुरन्त जवाब दिया 'जोशीली'। फुटबॉल के लिए उसके भीतर कितनी दीवानगी है इसका अन्दाज़ा इसी बात से लग जाता है कि उसके पास फुटबॉल की कोई 17 स्क्रेपबुक हैं।

फुटबॉल के प्रति अपने जुनून को वो कुछ इस तरह बताती है –

**फुटबॉल से परिचय कैसे हुआ?**

दरअसल मेरे पिता फुटबॉल खेला करते थे और उन्हें फुटबॉल से बहुत प्यार है। वो टीवी पर फुटबॉल के मैच देखा करते थे तो इस तरह मुझे भी उसमें दिलचस्पी हो गई। और मेरे भाई के दोस्त उसके साथ खेलने आया करते थे और मैं भी उनके साथ खेला करती थी।

**फुटबॉल से जुड़ा पहला अनुभव?**

एक बार मेरे पिता और मेरे भाई के दोस्त फुटबॉल खेल रहे थे। तब मैं बहुत छोटी थी। जहाँ वो लोग खेल रहे थे मैं भी वहाँ चली गई और उनके साथ खेलने की कोशिश करने लगी। बॉल मेरे पिताजी के पास आई। मैं उसे उनसे छीनने के लिए भागी और वे मुझ पर गिर पड़े! बस यहीं से मेरा फुटबॉल का सफर शुरू हुआ।

**ओएमबीसी की चयन प्रक्रिया के दौरान दिमाग में क्या चल रहा था?**

यही कि मुझे सिलेक्ट होना है और जो भी टेस्ट होंगे उनमें बेहतरीन प्रदर्शन करना है।

**जब वर्ल्ड कप के दौरान मैदान पर गईं तो कैसा लगा?**

ज़बरदस्त अनुभव रहा। मैंने उसका पूरा मज़ा लिया और वो मेरी ज़िन्दगी का सबसे अच्छा दिन था।

**एक सवाल जो हर फुटबॉल प्रेमी से पूछा जाता है, कौन ज़्यादा बेहतर खिलाड़ी है, रोनाल्डो या मैसी?**

मैसी मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है और हमेशा रहेगा। और चूँकि मैं मैसी को इतना पसन्द करती हूँ इसलिए कभी-कभी रोनाल्डो की उतनी तारीफ नहीं कर पाती क्योंकि उनके बीच एक होड़ बना दी गई है। लेकिन अपने भीतर मैं ज़रूर मानती हूँ कि रोनाल्डो भी बहुत अच्छा खिलाड़ी है। दोनों ही अच्छे हैं और मुझे लगता है कि उनकी तुलना करने की कोई ज़रूरत नहीं है। दोनों के पास अपना-अपना अलग हुनर है, प्रतिभा है, खेल की समझ है। और मैदान के बाहर वो दोनों अच्छे दोस्त हैं। मैसी के बारे में तो मैं कह सकती हूँ कि वो बहुत विनम्र है और अपनी शेखी बिलकुल नहीं बघारता। हाँ रोनाल्डो ज़रूर उतना विनम्र तो नहीं है जितना मैसी, और ये मैं इसलिए नहीं कह रही हूँ कि मैं उसकी फैन नहीं हूँ बल्कि ये हकीकत है। और ये भी एक कारण है कि मुझे मैसी ज़्यादा पसन्द है। चाहे मैदान के भीतर हो या बाहर, मैसी का व्यवहार, उसका रवैया बहुत अच्छा है।

**पसन्दीदा महिला फुटबॉल टीम और खिलाड़ी?**

मेरी पसन्दीदा महिला टीम है एफसी बार्सिलोना और पसन्दीदा खिलाड़ी है लीक मार्टन्स।

**तुम महिला फुटबॉल के बारे में क्या सोचती हो? भारत में और दुनियाभर में भी लड़कों की फुटबॉल का ही प्रचार किया जाता है। तो ज़ाहिर है दिमाग में सवाल उठता है कि ऐसा क्यों है?**

मैं लकी हूँ कि मुझे अपने स्कूल के कारण फुटबॉल से इस कदर जुड़ने का मौका मिला। ॠषि वैली की लड़कियों की फुटबॉल टीम है जिसमें मुझे शामिल किया

गया है। भले ही कुछ लोग चिढ़ाते हों कि तुम तो सीनियर लड़कियों की टीम में खेलती हो लेकिन मुझे जब से फुटबॉल का जुनून हुआ है, मुझे एक बात समझ में आई है कि फुटबॉल तो हर उम्र के व्यक्ति का खेल है। अभी जब मैं सेंट पीटर्सबर्ग में थी तो हम पीटरहॉफ नाम के पार्क गए थे। मैंने वहाँ एक बुज़ुर्ग आदमी को फुटबॉल खेलते हुए देखा। और वो क्या खेल रहे थे! ये सिर्फ हुनर और प्रतिभा की बात है। इन बातों का कोई मतलब नहीं कि आप लड़का हैं या लड़की, आपकी उम्र क्या है या आप किन हालातों से आते हैं।

मेरे स्कूल वालों ने मुझे दूसरी लड़कियों की मदद करने के लिए भी प्रेरित किया है। मुझे उम्मीद है कि मुझे मिले मौके से दूसरी लड़कियों को न सिर्फ मेरे स्तर तक आने का बल्कि इससे भी आगे जाने का मौका मिलेगा। मेरे माता-पिता ने भी मुझसे यही कहा है कि मैंने एक बुनियाद रख दी है। अब ये मेरे और बाकी लड़कियों के ऊपर है कि हम सबसे ऊँचे स्तर तक पहुँचे, और महिला वर्ल्ड कप की टीम का हिस्सा बनने की कोशिश करें।

**भारतीय फुटबॉल टीम के बारे में क्या सोचती हो?**

बाइचुंग भूटिया के समय से अब भारतीय टीम बहुत अच्छी हो चुकी है। अब हमारे यहाँ बहुत से युवा लोग फुटबॉल खेल रहे हैं और उनमें इस खेल के लिए बहुत जुनून है। उनको देखकर ये महसूस होता है कि वे भी विश्व स्तर पर अपने जौहर दिखाना चाहते हैं। लेकिन भारत में सुविधाएँ इतनी खराब हैं कि हमारी टीम उस स्तर की किसी भी टीम के सामने टिक नहीं पाएगी।

अगली बार वर्ल्ड कप कतार में होगा। अभी पिछले दिनों हमने इन्टरकॉन्टिनैन्टल कप जीता। यह हमने सुनील छेत्री और जेजे लालपेखलुआ जैसे खिलाड़ियों के दम पर जीता जबकि हमारे सामने मुश्किल टीमें थीं। इसके बाद लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि भारत भी अगला वर्ल्ड कप खेलेगा। यह कह देना भर काफी नहीं होगा। पहले हमें 2019 में होने वाले एशियन कप पर फोकस करना चाहिए। अगर हम उसमें जीत सके तो आगे चलकर वर्ल्ड कप की राह खुल सकती है। मेरा मानना है कि अभी हमें उस स्तर पर पहुँचने में 10-20 साल लग जाएँगे। मुझे पूरा यकीन है कि भारतीय टीम भी विश्व स्तर पर ज़रूर पहुँचेगी।

**तुम सुनील छेत्री से मिलीं। कैसा अनुभव रहा?**

वो बहुत ही विनम्र और शान्त व्यक्ति हैं। उन्होंने चयन प्रक्रिया के दौरान हमें बहुत प्रोत्साहित किया। वो बहुत भले इंसान भी हैं। उन्होंने हमें खेल के बारे में बहुत-से सुझाव दिए, अच्छे गुर सिखाए। मुझे लगता है कि बच्चे उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं।

**अगर तुम्हारे पास टाइम मशीन हो तो तुम कौन-सा मैच लाइव देखना चाहोगी, स्टेडियम में बैठकर?**

अगर आज के दौर की बात करें तो मैं मैसी का मैच देखना चाहूँगी। मैंने भारत का मैच तो देखा है, अब मैंने वर्ल्ड कप का मैच भी स्टेडियम में बैठकर देख लिया। अब एक ही चीज़ बचती है जो मेरा सपना है कि मैं बार्सिलोना का मैच देखूँ, मैसी को देखूँ, उससे बात कर सकूँ। हालाँकि ऐसा होना बहुत मुश्किल है लेकिन मैं उम्मीद करती हूँ कि ऐसा हो सकेगा।

नतानिया काल्पनिक कहानियाँ लिखना, गाने सुनना, फिल्म देखना, कविताएँ लिखना, लोगों से चर्चा करना और पढ़ना पसन्द करती है। वह जंगली जानवरों और प्रकृति में भी रुचि रखती है। लेकिन उससे बात करने के बाद मुझे समझ में आया कि फुटबाल ही उसकी ज़िन्दगी है।

अनुवाद - भरत त्रिपाठी
फोटोग्राफ - ऐनी और मैथ्यू

# खज़ाने की खोज

पारुल बत्रा
चित्र: प्रशान्त सोनी

मेरा जन्म मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ ज़िले में हुआ। मेरे घर के सामने पहाड़ी पर विशाल किला था और नीचे था बड़ा-सा मैदान। यहीं शहर बसा हुआ है। हमारे घर के बगल में पुराने ज़माने के किसी ज़मींदार की एक बड़ी हवेली थी। ज़मींदार के बच्चे खुद को टीकमगढ़ के राजा के रिश्तेदार बताते थे। बाद में पिताजी ने बताया कि हवेली के बच्चों के परदादा बब्बा जू, ओरछा राज्य के राजा प्रताप सिंह जू देव के दीवान थे। बुन्देली में जू देव आदर सूचक है।

मैं और मेरे भाई गगन के दोस्त चुनमुन और विक्रान्त इसी हवेली में रहते थे। हम अकसर साथ खेला करते। हमें हवेली में खेलना बहुत पसन्द था। हालाँकि हमारा घर भी एक छोटी हवेलीनुमा ही था। मेरे परदादा ने उसे चुनमुन के परदादा से खरीदा था। इसलिए वह हवेली का ही हिस्सा था। हवेली बहुत बड़ी थी। छत पर बना एक बड़ा कमरा सिर्फ हम बच्चों के खेलने के काम आता। हवेली की लम्बी-चौड़ी छत पर हम नागिन-टापू, विष-अमृत, छुपन-छुपाई जैसे ढेरों खेल खेलते। हवेली में बड़े-बड़े सूने कमरे, लम्बी अँधेरी सीढ़ियाँ, वीरान दालान, नीचे आँगन में ढेर सारी अँधेरी कोठरियाँ थीं। इन कोठरियों को आजकल सब्ज़ीमण्डी के फलवालों ने किराए पर ले रखा है। इनमें आजकल भूसा या सूखी घास भरी रहती है। फलों को इसी में रखकर पकाया जाता है। बचपन में इन कोठरियों में खेलना, छुपना हमें बहुत भाता था। हवेली के दो हिस्से थे। आधा हिस्सा टूटा और जर्जर था। वहाँ हम कम ही जाते थे। वह हिस्सा थोड़ा डरावना भी लगता था। दूसरे हिस्से में चुनमुन का परिवार रहता था। हवेली में हमारे साथ-साथ कुत्ते, बिल्लियाँ, नेवले और आँगन में लगे नीम पर तोतों के झुण्ड भी बसेरा करते थे।

हमारे घर से सामने पठार पर किला दिखता। किले के दोनों ओर खाई थी। बचपन से ही मेरी इच्छा किले को अन्दर से देखने की थी। चुनमुन अकसर मुझे किले की कहानियाँ सुनाती। उसने बताया कि किले के राजा उनके रिश्तेदार हैं। एक बार वह किले में गई भी थी। उसने बताया कि वहाँ बहुत बड़ा खज़ाना है। हीरे-मोतियों के हार हैं। रानी ने उसे एक नीले मोतियों की माला उपहार में भी दी थी।

"कहाँ है वह माला?" मैंने पूछा। "मेरी माँ के पास।" चुनमुन ने बताया। "किले से बाहर निकलने की कई सुरंगें हैं। दुश्मन किले पर हमला करते तो राजा अपने साथियों के साथ किले से बाहर निकल जाते थे। ये सुरंगें कई मील लम्बी हैं और दूसरे किलों तक भी जाती हैं। इन सुरंगों में खज़ाना भी छुपाया जाता था।" यह सब सुनकर किले में जाने की मेरी इच्छा और भी बढ़ जाया करती थी।

एक बार चुनमुन ने बताया कि उनकी हवेली से भी एक सुरंग सामने पहाड़ी वाले किले तक जाती है। चुनमुन की माँ से पता चला कि यह सुरंग उनके परदादा बब्बा जू ने बनवाई थी। इस सुरंग में भी खज़ाना छुपा हो सकता है क्या? मैंने सोचा। चुनमुन से भी पूछा। पर चुनमुन की माँ ने बताया कि सुरंग को बब्बा जू ने बन्द करवा दिया था। लेकिन सुरंग में खज़ाना हो सकने की बात मेरे दिमाग में अटकी रही। “हो सकता है कि ढूँढने पर सुरंग में कुछ मिल ही जाए!” मैंने चुनमुन से कहा। उसने भी इस खोज में अपनी रज़ामन्दी दिखाई।

लेकिन शुरुआत कहाँ से और कैसे की जाए? चुनमुन ने सलाह दी कि ज़्यादा लोग साथ रहेंगे तो खतरा कम होगा। इसलिए हमने गगन और विक्रान्त को भी साथ ले लिया। उन दोनों को हमने सिर्फ सुरंग तलाशने के अभियान के बारे में बताया, खज़ाने के बारे में नहीं। हम खज़ाने का और बँटवारा नहीं करना चाहते थे।

हमने हवेली के हर हिस्से को ध्यान से देखना शुरू किया। शुरुआत हवेली के पुराने टूटे हिस्से से की लेकिन वहाँ टूटी छत और दीवारों के अलावा कुछ न मिला। फिर उस हिस्से की खोजबीन की जहाँ उनका परिवार रहता था। हमने आँगन के चारों तरफ बनी कोठरियों को खंगाला। वहाँ भी कुछ नहीं मिला।

फिर हमने ऊपरी तल के कमरों की छानबीन की। हम इनसे अच्छी तरह परिचित थे क्योंकि अकसर हम यहीं खेला करते थे। चुनमुन और मेरे घर के बीच फलों की कुछ दुकानें थीं। हवेली के कमरों की खिड़कियाँ बाहर की ओर खुलती थीं। मैं हमेशा चुनमुन के घर जाने के लिए अपनी छत की मुँडेर पार कर फलों की दुकानों की छत पर कूदती और फिर वहाँ से खिड़की से सीधे उनके बिस्तर पर कूद जाती थी।

खैर, खज़ाने की खोज करते काफी दिन बीत गए थे पर सुरंग के मुहाने का अब तक कोई अता-पता न था। फिर एक दिन चुनमुन ने बताया कि उसे सुरंग के बारे में पता चल गया है। वह मुझे सुरंग दिखाने ले गई। वह जगह हवेली के टूटे और सही-सलामत हिस्से के बीच में थी – प्रथम तल के पूजाघर के ठीक सामने। बाद में पिताजी ने बताया कि बब्बा जू काफी धार्मिक किस्म के व्यक्ति थे और उनका ज़्यादातर समय पूजाघर में ही बीतता था। मेरे पिताजी भी बचपन में हवेली में चुनमुन के पापा के साथ खेला करते थे। जब बच्चे पूजाघर में जाते तो बब्बा जू उन्हें पान का प्रसाद दिया करते थे।

पूजाघर के थोड़ा आगे जाकर चुनमुन ने दाईं तरफ नीचे जा रही सीढ़ियों की तरफ इशारा किया। यह हिस्सा अब कचरा फेंकने के काम में आता था। नीचे कचरे के सिवा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। सीढ़ियाँ घूमते हुए नीचे जा रही थीं। यहाँ सुरंग होने की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता था। हमने नीचे जाकर देखना तय किया। लेकिन सुरंग की हालत देखकर हमारा उत्साह कम होने लगा। हमें डर ज़्यादा लग रहा था। सुरंग में अँधेरा था इसलिए हमने माचिस और मोमबत्ती का इन्तज़ाम कर लिया था।

अगले दिन हम चारों सुरंग के बाहर खड़े सोच रहे थे कि नीचे कैसे उतरा जाए? सबसे आगे कौन चलेगा? इसके लिए चारों में से कोई तैयार न था। हम एक-दूसरे को धकेल रहे थे। गगन हम में सबसे छोटा था। हमने किसी तरह उसे फुसलाकर आगे चलने के लिए तैयार किया। लेकिन मुश्किल से चार-पाँच सीढ़ियाँ उतरने के बाद उसने आगे चलने से साफ मना कर दिया। ऐसे में मुझे ही आगे आना पड़ा। सीढ़ियों के बाईं तरफ मुड़ने के कारण दिन की रोशनी मुश्किल से अन्दर आ पा रही थी। आगे अँधेरा घना था। हमने एक बड़ी-सी मोमबत्ती जला ली। लगभग दस सीढ़ियाँ उतरने के बाद अब कचरा नहीं दिख रहा था। सिर्फ सीढ़ियाँ दिख रही थीं। हम थोड़ा रुककर आगे बढ़े। हम चारों डरे हुए थे। सुरंग की दीवारों में बड़े-बड़े आले बने हुए थे। मैंने एक आले में हाथ डाला तो एक तरह का अनाज मेरे हाथ में आया। वह गेहूँ या चावल तो नहीं था। ज्वार-बाजरा भी नहीं था। चुनमुन ने बताया कि वह कोदो है। पहले सुरंगों में अनाज भी छुपाया जाता था। अगर लम्बे समय तक छुपना पड़े तो कुछ खाने के लिए भी होना चाहिए!

मैंने देखा कि सुरंग की दीवारों में दरवाज़े या खिड़की जैसी जगहें थीं जिनको ईंट और सीमेंट से बन्द किया गया था। ज़ाहिर है यह काम बाद में किया होगा क्योंकि पूरी हवेली में कहीं भी इस नई तरह की ईंटों का इस्तेमाल नहीं किया गया था। अब तक हम लोगों में कुछ हिम्मत आ गई थी। सुरंग में एक मोड़ और आया और हम आगे बढ़ गए। मोमबत्ती अभी भी साथ दे रही थी।

पर यह क्या! सुरंग तो आगे से बन्द थी। ईंट-सीमेंट की दीवार से उसे बन्द कर दिया गया था। ओह! यानी चुनमुन की माँ ने ठीक ही कहा था कि बब्बा जू ने सुरंग को बन्द करवा दिया था। तभी मुझे फर्श पर कोई चमकती हुई चीज़ दिखाई दी। "अरे देखो यह क्या पड़ा है!" मेरे मुँह से निकला। इससे पहले मेरे हाथ उस चीज़ तक पहुँच पाते चुनमुन ने लपककर उसे उठा लिया। वह कान में पहनने वाला झुमका था। उसमें सफेद पत्थर लगे हुए थे। मोमबत्ती की रोशनी में वह बहुत खूबसूरत लग रहा था।

"मुझे देखने दो।" मैंने कहा।

"नहीं यह मेरी माँ का है। जब वो यहाँ सफाई करने आई होंगी तब उनके कान से गिर गया होगा।" चुनमुन ने कहा। मैंने कहा, "वो यहाँ सफाई करने क्यों आई होंगी। तुम लोग तो यहाँ कचरा फेंकते हो।"

"नहीं यह मेरी माँ का है।" चुनमुन ने कहा और उसे लिए-लिए ऊपर भाग गई। पीछे-पीछे विक्रान्त, मैं और गगन भी भागे।

चुनमुन ने शायद वह झुमका अपनी माँ को दे दिया था। उनसे माँगने के बाद भी मुझे वह दोबारा देखने को नहीं मिला। मुझे यही लगता रहा कि शायद उसमें बेशकीमती पत्थर जड़े हों! हो सकता है सुरंग से दुश्मन से बचकर भागते वक्त किसी रानी के कान से वह गिर गया हो? कौन जाने???

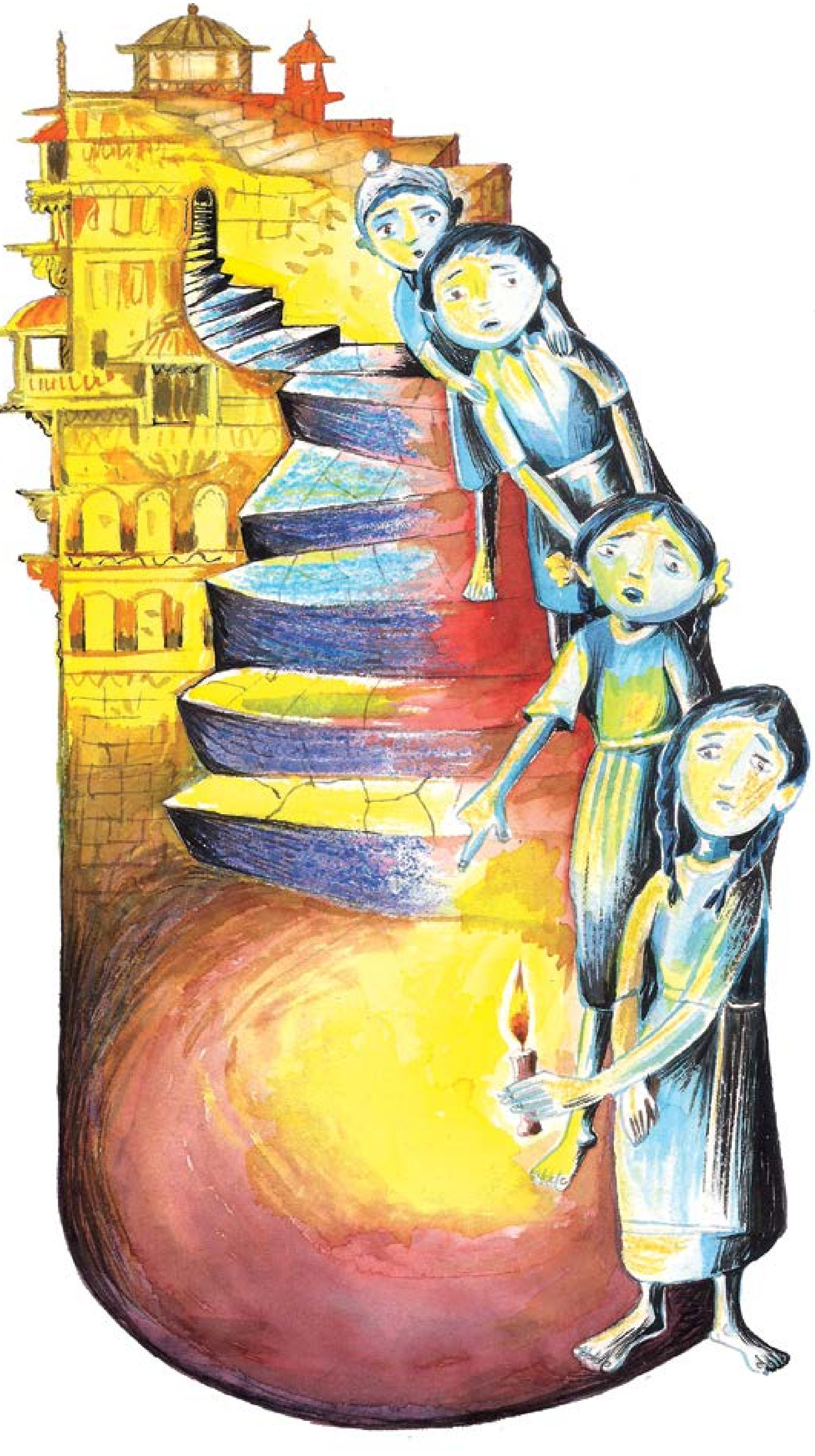

# क्यों क्यों?

कुछ दिनों पहले हमने बहुत से बच्चों से एक सवाल पूछा था - फूलों को अपना रंग कहाँ से मिलता है?

पाँचवी से लेकर नौवीं क्लास के कई बच्चों ने जवाब भेजे। अपने आसपास दिखने वाली चीज़ों और घटनाओं के बारे में हम कितने तरीकों से सोच सकते हैं यह इन जवाबों से समझ आता है। सहज दिखने वाली बातों पर सवाल पूछना और उनके उत्तर अलग-अलग तरह से खोजना ही विज्ञान और दर्शन दोनों की शुरुआत है।

बच्चों के विविध जवाबों में से कुछ तुम भी पढ़ो... मन करे तो तुम भी अपने जवाब लिख भेजो।

## फूलों को अपना रंग कहाँ से मिलता है?

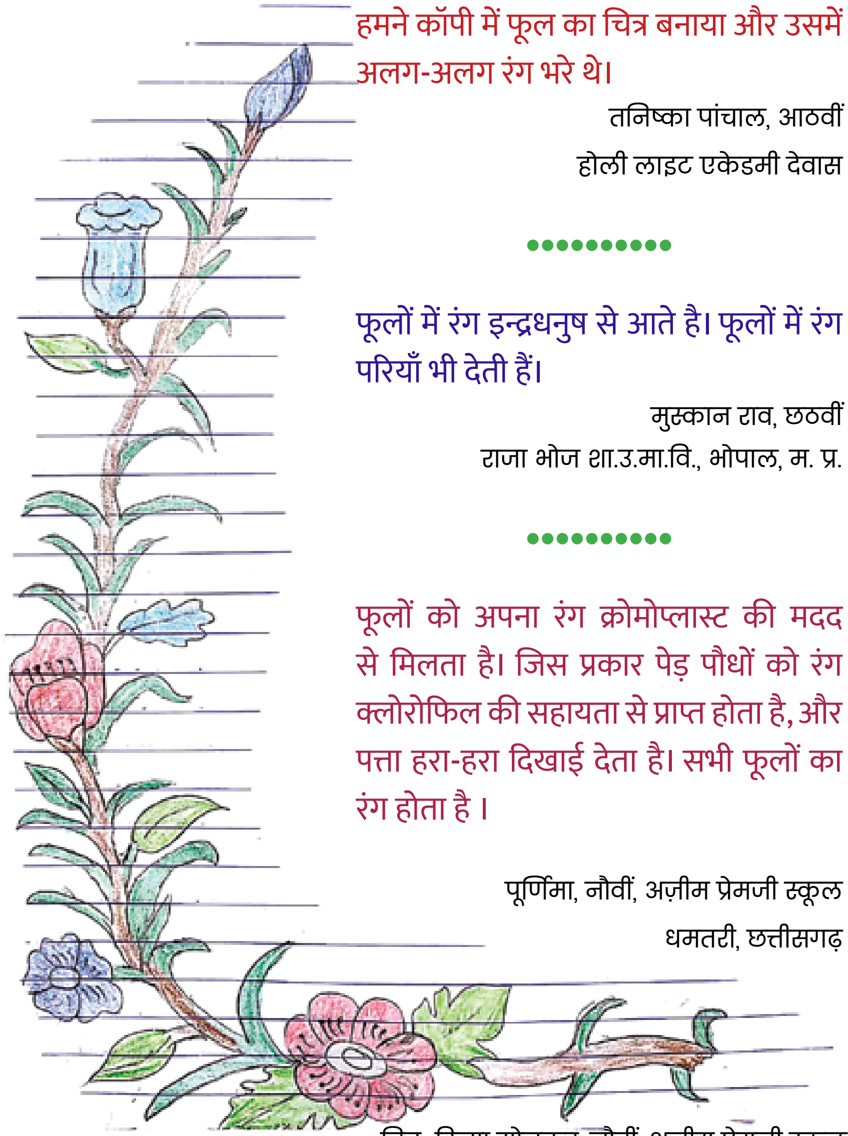

हमने कॉपी में फूल का चित्र बनाया और उसमें अलग-अलग रंग भरे थे।

तनिष्का पांचाल, आठवीं
होली लाइट एकेडमी देवास

फूलों में रंग इन्द्रधनुष से आते है। फूलों में रंग परियाँ भी देती हैं।

मुस्कान राव, छठवीं
राजा भोज शा.उ.मा.वि., भोपाल, म. प्र.

फूलों को अपना रंग क्रोमोप्लास्ट की मदद से मिलता है। जिस प्रकार पेड़ पौधों को रंग क्लोरोफिल की सहायता से प्राप्त होता है, और पत्ता हरा-हरा दिखाई देता है। सभी फूलों का रंग होता है ।

पूर्णिमा, नौवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
धमतरी, छत्तीसगढ़

चित्र: दिव्या सोनकर, नौवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
धमतरी, छत्तीसगढ़

फूलों को अपना रंग प्रकृति से मिलता है। जब फूलों का विकास होता है तो उसे अपनी माँ यानी उसे जन्म देने वाली से रंग मिलता है। उनको वातावरण के कारण भी अलग-अलग रंग प्राप्त होते हैं, ऐसे में उनके शरीर का अनुकूलन हो जाता है। जैसे मनुष्य का अनुकूलन हो जाता है। ठण्ड वाली जगह में रहने वाले जीवों के शरीर में सामान्य जीवों की अपेक्षा अधिक बाल पाए जाते हैं।

विवेक देवांगन, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी
छत्तीसगढ़

फूलों को रंग विभिन्न प्रकार से मिलते हैं। अगर फूलों को लाल रंग व पीला रंग चाहिए होता है तो ये उन्हें इन्द्रधनुष से मिलते हैं। वैसे सात रंगों के इन्द्रधनुष में हमें सभी रंग मिल जाएँगे। अगर फूलों को रंग नहीं मिलते हैं तो वे फूल नहीं कह लाएँगे।

मोनिका, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
मटली, उत्तराखण्ड

बारिश और धूप में इन्द्रधनुष निकलता है उससे फूलों में रंग आता है। फूलों में, पौधे में भी प्रजनन होता है। जिससे पिछले फूलों के जैसा रंग उसमें आता है। फूलों के मीठे रस के कारण उसमें रंग आता है। प्रकृति से उसमें रंग आता है।

तृप्ति साहू, सातवीं, पण्डित श्यामा प्रसाद मुखर्जी
शा.उ.मा.वि., रायपुर, छत्तीसगढ़

फूलों को रंग अलग-अलग कारण से मिलते हैं। जैसे हम गोबर को कलम में लगाते हैं, गोबर में कुछ पदार्थ मिले होते हैं जिससे फूलों को रंग बनाने में मदद मिल जाती है। गोबर में पदार्थ तब आता है जब गाय या भैंस कुछ ऐसे भोजन करती हैं जिससे रंग का निर्माण होता है। जैसे वे भोजन में पैरा, घास, धान, पत्ता आदि चीजों को खाती हैं। पैरा का रंग पीला होता है, और इससे गुलाब को पीला रंग बनाने में मदद मिलती है। घास, पत्ते हरे रंग के होते हैं जो हरे वाले गुलाब को हरा रंग देते हैं। और चावल से सफेद रंग का निर्माण होता है जिससे सफेद गुलाबों को मदद मिलती है।

फूल पर मधुमक्खी, तितली जैसे अनेक कीड़े बैठते हैं, रस चूसते समय उनकी साँस बाहर आती है। साँस से अम्ल निकलता है और उसी से रंग का निर्माण होता होगा। जहाँ तितलियाँ ज़्यादा घूमती हैं, वहाँ के फूल का रंग सुन्दर होता है।

प्रवीण साहू, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

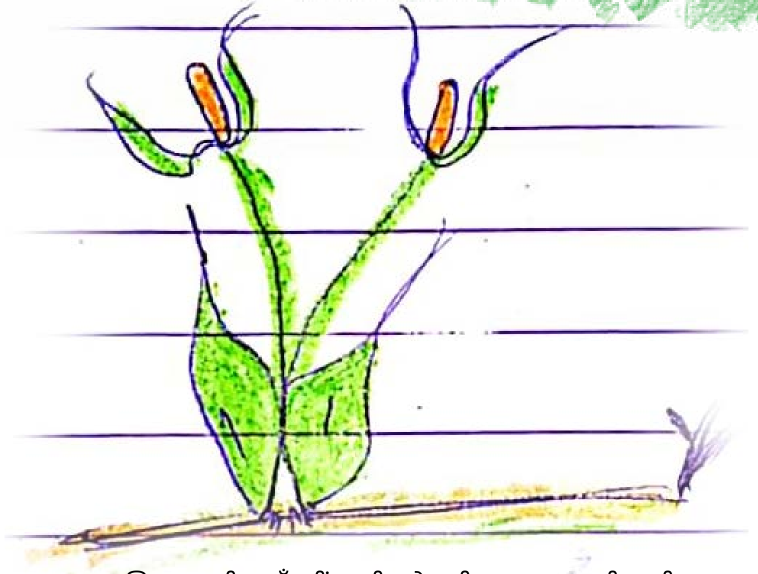

चित्र: मनदीप, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

तितली फूल के रस पीती है तो उसका रंग फूलों पे लग जाता है। वे फूल में फैल जाती हैं। पौधे में हरा रंग पहले से होता है, मिट्टी भूरी या काली होती है, वे जब मिक्स होते हैं तब फूलों में रंग आ जाता है।

वेद प्रकाश, पाँचवी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

फूलों में रंग धूप के कारण आता है, और जब हम फूलों पर पानी डालते हैं तब फूल खिलते हैं, और उन पर सुन्दर-सुन्दर रंग आते हैं।

योगेश पाण्ड्या, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मटली, उत्तराखण्ड

फूलों में भगवान बैठते हैं इसलिए फूलों में रंग आता है।

अब्दुल, छठी, राजा भोज शा.उ.मा.वि, भोपाल, म. प्र.

चित्र: खुशहाल सिन्हा, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

सूरज की किरणों के कारण फूल खिल उठते हैं। या जीव-जन्तुओं को अपनी ओर खींचने के लिए फूलों को रंग मिलता है।

सृजन सिन्हा, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी, धमतरी, छत्तीसगढ़

# एक शहर, दो वैज्ञानिक
## –जीवों का नामकरण और तापमान का मापन

चित्रा विश्वनाथन

हम दो दिन स्टॉकहोम में रहे और वहाँ के सुहावने मौसम का आनन्द लेते हुए सड़कों पर पैदल घूमते रहे। वहाँ की खासियत है कि गर्मी के मौसम में दिन बहुत लम्बे होते हैं। रात के साढ़े दस बजे तक रोशनी रहती है और सूरज चार बजे सुबह उग जाता है। यानी, 18 घण्टे का दिन। हमें एक ही परेशानी थी कि इस पूरी यात्रा में हम बहुत कम सो पाए। बहरहाल हम तीसरे दिन निकल पड़े उप्पसला की ओर। 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह शहर विज्ञान प्रेमियों के लिए खास मायने रखता है।

उप्पसला पहुँचकर हम सीधे वहाँ के बोटैनिकल गार्डन पहुँचे। यह सन् 1655 में स्थापित हुआ था और इसमें दुनियाभर से लाए गए 1800 से ज़्यादा पेड़-पौधे थे। कहते हैं कि 1702 में भीषण आग के कारण ज़्यादातर पौधे झुलस गए थे। सन् 1741 में एक वनस्पति शास्त्री, कार्ल लिनीयस को इसका निदेशक नियुक्त किया गया। लिनीयस का नाम विश्व के महान जीव वैज्ञानिकों में शामिल है। समूचे जीव जगत का वर्गीकरण और नामकरण इनके द्वारा बनाई गई व्यवस्था के अनुसार ही होता है। लिनीयस ने इस गार्डन को व्यवस्थित किया और आज इसमें 8000 से भी अधिक किस्म के पेड़-पौधे हैं जिनका विधिवत अध्ययन किया जा सकता है। यह लिनीयन गार्डन के नाम से मशहूर है। इसे ठीक से देखने में और इसमें फल-फूल रहे पौधों का बारीकी से अवलोकन करने में कई दिन लग सकते हैं।

एक ओर तरह-तरह के पेड़ हैं। दूसरी तरफ पानी में उगने वाले पौधों के लिए तीन-चार तरह के गड्ढे या कुण्ड बनाए गए हैं। इनमें तालाब, नदी जैसी हालातों को निर्मित किया गया है ताकि ये पौधे वहाँ सहजता से उग सकें। एक ओर वसन्त में फूलने वाले पौधे तो दूसरी ओर शरद में फूलने वाले। एक विशाल भवन में ऐसे पौधों को रखा गया है जिनके लिए अनुकूल वातावरण कृत्रिम रूप से बनाया गया है। ठण्ड में वे अन्दर रखे जाते हैं और गर्मी में उन्हें बाहर निकालकर धूप दिखाई जाती है। हर एक हिस्से को किस तरह निर्मित करना है, वहाँ कौन-से पौधे होंगे, उनके बीच कितनी जगह होगी, उनकी देखभाल कैसे की जाएगी, इन सब पर लिनीयस के निर्देश के अनुसार ही आज भी काम होता है।

हमारे पास वक्त कम था तो हम जल्दी से एक गाड़ी में उसका चक्कर लगाकर आए। पास में ही एक बहुत पुराना किला है जिसमें एक बहुत पुराना घण्टा है। कहते हैं कि सौ साल पहले तक इसके बजने से लोग सुबह उठते थे और इसके बजने पर शाम को काम बन्द करके घर जाते थे। किले से हम उप्पसला के मुख्य गिरजाघर गए। हमने पढ़ रखा था कि वहीं लिनीयस की कब्र है। गिरजाघर बहुत पुराना था – इसका निर्माण सन् 1270 में शुरू हुआ था। इसके दो शिखर हैं, जो इतने ऊँचे हैं कि उन्हें देखने पर गर्दन अकड़ जाती है। यहाँ बहुत-से राजा, रानी, पादरियों वगैरह की कब्रें हैं मगर मुझे लिनीयस की कब्र कहीं नहीं दिखी, आसपास के लोगों से पूछने पर भी किसी ने बताया नहीं। आखिर जब हम गिरजाघर के अन्दर घुसे तो मुझे, एक सामान्य-सा पत्थर दिखा जिस पर लिखा था कि यह कार्ल लिनीयस की कब्र है। आते-जाते लोग उस पर चलकर जा रहे थे।

उप्पसला में इससे भी पुराना एक गिरजाघर है जो कि इससे कहीं छोटा है। इसका निर्माण दसवीं शताब्दी में हुआ था। खेत और घास के मैदानों के बीच बना यह गिरजाघर बहुत सुन्दर है। लेकिन मैं वहाँ एक और वैज्ञानिक की कब्र देखने गई थी – सैल्सियस की। आप तापमान नापते समय हमेशा लिखते होंगे, फलां डिग्री सैल्सियस। ये वही सैल्सियस थे जिन्होंने तापमान नापने का यह तरीका ईजाद किया था। वैसे सैल्सियस खगोलशास्त्री थे और उन्होंने इस क्षेत्र में बहुत-सी महत्वपूर्ण खोजें की थीं। दुर्भाग्यवश वे 44 साल की कम उम्र में टीबी बीमारी के कारण मर गए। इस गिरजाघर में काफी खोजने के बाद मुझे उनकी कब्र मिली।

शहर के लोग इन दो वैज्ञानिकों को लेकर बहुत गर्व महसूस करते हैं, और इनकी यादों को सहेजने के लिए म्यूज़ियम, गार्डन, पुस्तकालय और शोध केन्द्र बना रखे हैं। मेरी स्वीडेन यात्रा का एक मुख्य उद्देश्य यहाँ के स्मारकों को देखना था। इसके पूरा होते ही हम उत्तर नार्वे की ओर चल पड़े।

(जन्म - 1707, मृत्यु - 1778)

कार्ल लिनीयस

कार्ल लिनीयस को बचपन से ही पेड़-पौधों का शौक था। 6-8 साल की उम्र से ही उन्होंने अपने घर पर तरह-तरह के पौधे उगाना शुरू कर दिया था। जब वे कॉलेज में दूसरे साल की पढ़ाई कर रहे थे, उन्होंने एक शोधपत्र प्रकाशित किया। इससे प्रभावित विश्वविद्यालय ने उन्हें स्नातक बनने से ही पहले ही वनस्पति शास्त्र का लेक्चरार नियुक्त कर दिया। आखिर पौधों के बारे में उनसे ज़्यादा किसी और को जानकारी नहीं थी।

लिनीयस आजीवन पौधों व प्राणियों का अध्ययन करते रहे और उन पर शोध पत्र और पुस्तकें प्रकाशित करते रहे। उनका एक महत्वपूर्ण काम था नॉर्वे के ध्रुवीय प्रदेश (लैपलैण्ड) की यात्रा और वहाँ के पौधों, प्राणियों तथा खनिजों का संकलन। उन्होंने साथ-साथ वहाँ रहने वाले सामी लोगों के जीवन का भी दस्तावेजीकरण किया था। लिनीयस का सबसे महत्वपूर्ण काम है जीवों का वर्गीकरण, जिसके लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। उन्होंने सभी जीवों को दो हिस्से वाले नामों से वर्गीकृत किया। जब 70 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई तब तक वे 13,000 जीवों का वर्गीकरण और नामकरण कर चुके थे। उनके पास पौधों, कीटों आदि का विशाल संग्रह था जिसे आज संग्रहालयों में सुरक्षित रखा गया है।

(जन्म - 1701, मृत्यु - 1744)

एंडर्स सेल्सियस

सैल्सियस एक खगोलशास्त्री थे और उप्पसला विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे। उन्होंने पाया कि किसी जगह पानी के उबलने व जमने का तापमान हमेशा एक-सा रहता है। उन्होंने इन दोनों तापमानों के बीच की दूरी को सौ भागों में बाँट दिया जिससे सही तापमान नापा जा सके। उनके द्वारा शुरू किया गया यह तरीका धीरे-धीरे पूरी दुनिया में अपनाया गया। मज़े की बात यह है उन्होंने जो अंक निर्धारित किया था वह आज से बिलकुल उलटा था। यानी, पानी के उबलने का तापमान उन्होंने 0 माना और बर्फ में जमने का तापमान 100 माना। इसे उलटा करने का श्रेय कार्ल लिनीयस को जाता है जिन्होंने 0 को जमने का और 100 को उबलने का तापमान तय किया। इसके अलावा सैल्सियस ने अक्षांश और देशान्तर नापने का तरीका विकसित किया, और उत्तरी ध्रुवीय प्रदेशों में ठण्ड के महीनों में पूरे आसमान को चमकाने वाली उत्तरी रोशनी का अध्ययन किया।

# गिटपिट की हँसी

सन्दीप नाईक
चित्र: नीलेश गहलोत

**बहुत** साल पुरानी बात है, मैं और मेरे कुछ दोस्त गर्मी की छुट्टियों में खण्डवा गए थे। मेरे एक मित्र शोभा राउत का वहाँ एक खूबसूरत भवन था। हम लोग वहीं रुके थे। आठ दिन तक हमने वहाँ के ढेर सारे बच्चों के साथ खूब खेल, विज्ञान के प्रयोग किए और कागज़ और मिट्टी के खिलौने बनाए।

शाम को खण्डवा के लोग मिलने आते, हम भी किसी ना किसी के घर जाते मिलने, चाय पीते नाश्ता करते और रात को लौट आते। एक दिन कोई कुमार साहब के घर गए थे। उन्होंने अपनी बेटी से मिलवाया और उसका नाम बताया कि यह गिटपिट है, यह इन्दौर के मेडिकल कॉलेज से डाक्टरी पढ़ रही है।

मुझे हँसी आ गई, उस लडक़ी ने मुझे गुस्से से देखा और फिर ज़ोर से पापा को बोली, “देखो आपके दोस्त ही हँस रहे हैं। अब जब मैं बड़ी हो गई हूँ और मेडिकल कॉलेज में डाक्टरी की पढ़ाई करती हूँ तो सब मेरा नाम लेते हैं, पुकारते हैं, ‘ओ, गिटपिट! ओ खण्डवा वाली गिटपिट!’ और उसके बाद हँसने लगते हैं।” फिर थोड़ा सहज होकर बोली, “पापा आपने मेरा नाम ऐसा क्यों रखा?”

कुमार साहब बोले, “तुम छोटी थीं तो खूब गिटपिट करती थीं।”

मैं भी सोचता रहा कि सच में नाम तो मज़ेदार है पर इसको कितनी तकलीफ होती होगी।

चक मक

# कोमल

## टोले की पहली मैट्रिक पास लड़की...

गुल सारिका झा

फोटोग्राफ - प्रदीप विद्रोही

आमतौर पर दसवीं या बारहवीं के रिजल्ट के बाद लोग टॉपर्स की बात करते हैं। लेकिन हम तुम्हें घोघा गाँव की कोमल से मिलवाना चाहते हैं। कोमल दसवीं में 42.4 प्रतिशत अंक लेकर पास हुई है। मगर इसमें खास क्या है? कोमल अपने गाँव के मुशहरी टोले के इतिहास की पहली लड़की है जिसने दसवीं की परीक्षा दी और पास भी हो गई। हम उससे बात करना चाहते थे, मगर उनके घर पर फोन नहीं था। एक मित्र की सहायता से हमें पत्रकार प्रदीप विद्रोही का फोन नम्बर मिला। वे कोमल और उसके परिवार के सम्पर्क में थे और पढ़ाई में उसकी मदद कर रहे थे। उनसे चर्चा होने के बाद तय समय पर अगले दिन वह अपने रिपोर्टर के साथ कोमल के घर पहुँचे और अपने मोबाइल फोन के ज़रिए कोमल से हमारी बात करवाई।

मुशहरी टोले के लोग दलित समूहों में से हैं। इस टोले के ज़्यादातर बच्चे और बड़े ईंट भट्टों में मज़दूरी करते हैं। कोमल ने कहा, “पापा भागलपुर जाते हैं काम करने, मम्मी ईंटा भट्टी पर जाती है काम करने, बगले में है, हम भी जाते हैं मम्मी की तबियत खराब होने पर जब मम्मी काम करने जाती है तब हम भाई-बहन को सम्भालते हैं। जैसे - उनको तैयार करके स्कूल पहुँचाना, खाना पकाना, उनको खिलाना फिर कुँए से पानी लाना।”

सरकारी स्कूल होते हुए भी आखिर डेढ़ सौ सालों में यहाँ की कोई भी लड़की क्यों नहीं मैट्रिक पास कर सकी? हमने पूछा।

“स्कूल है लेकिन मजबूरी भी है, यहाँ हर कोई काम करता है। पाँचवीं के बाद ही ज़्यादातर बच्चे पढ़ाई छोड़कर काम करने लगते हैं।” वह धीरे-से बोली।

कोमल को खेलने-कूदने या पढ़ने का समय घर में तो बिलकुल नहीं मिलता है। हाँ स्कूल में वह पढ़ाई के साथ-साथ कबड्डी भी खेल लेती थी। परीक्षा की तैयारी के बारे में पूछने पर वह संकोच से कहती है, “कोई तैयारी नहीं किए, आधा घण्टा, ज़्यादा से ज़्यादा एक घण्टा, इससे ज़्यादा कभी नहीं पढ़े।”

विज्ञान में रुचि रखने वाली कोमल भागलपुर के टीएनबी कालेज में पढ़ना चाहती है लेकिन पढ़ाई में आने वाले खर्चे से डरी हुई है।

अच्छी बात यह है कि शहर के कई पत्रकारों ने कोमल से वादा किया है कि वह उसकी मदद करेंगे इसलिए वह खर्चे की फिक्र न करे। वह जहाँ तक चाहे पढ़ सकती है।

चक मक

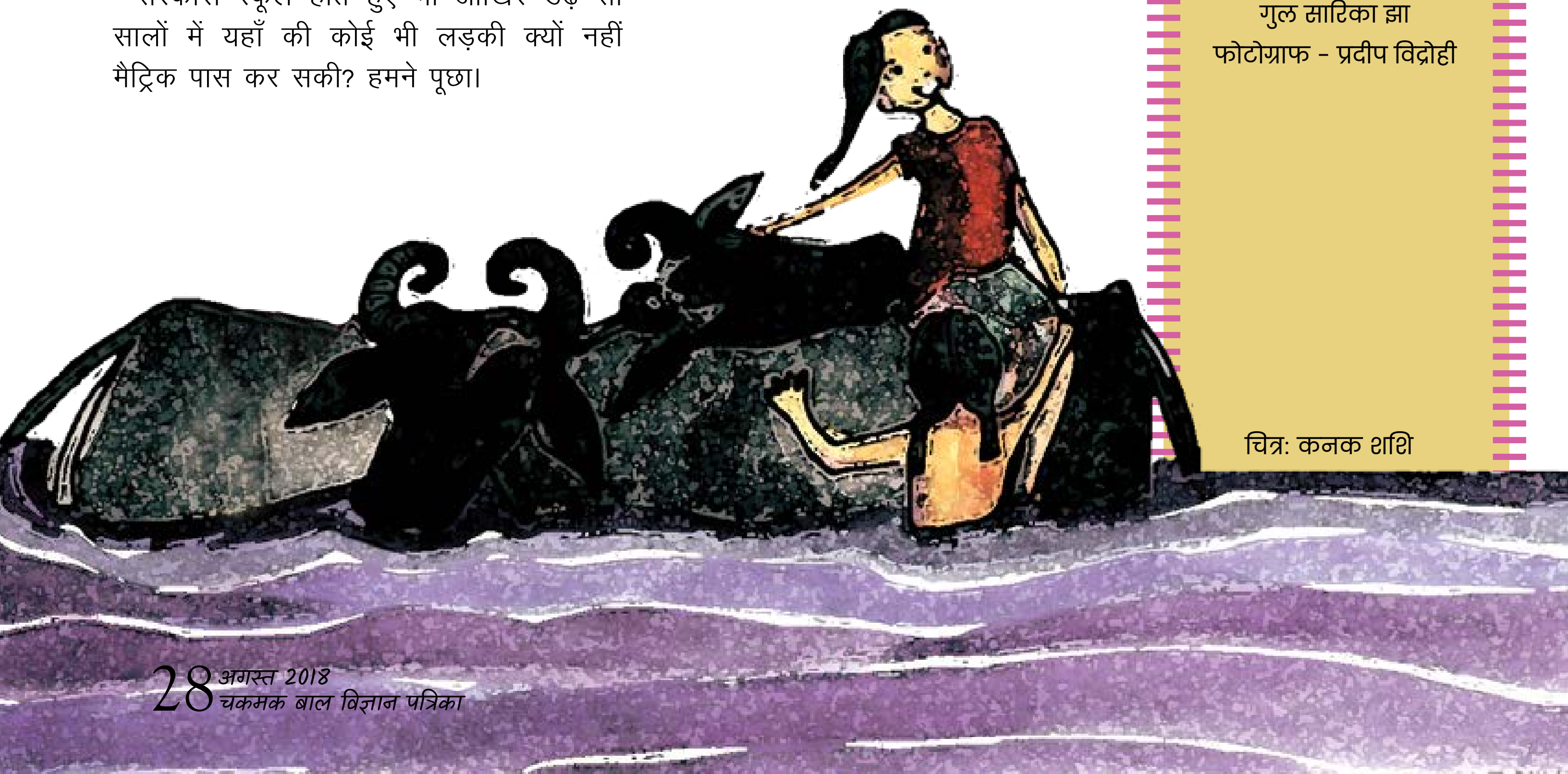

चित्र: कनक शशि

# पत्थर की किताब

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र: हबीब अली

बोलू और कूना बौने पहाड़ पर जा रहे थे। जहाँ वे पहले गए थे। वहाँ जाने पर हर बार रास्ता कुछ न कुछ बदल जाता। कई बार इतना बदल जाता कि उस जगह वे दूसरी बार नहीं पहुँच पाते थे। एक निश्चित जगह को वे हर बार खोजकर पाते थे। परन्तु, पहाड़ से नीचे लौटते समय उसे फिर खो देते थे। आज वे पहाड़ की उस जगह जाना चाहते थे जहाँ उन्हें तराशा तलघर मिला था। उसे किसी मनुष्य ने न तराशा हो, पानी ने तराशा हो। वे आज नीचे उतरकर पानी के टपकने की जगह को ढूँढना चाहते थे। आज उनके पास पंख की छतरी नहीं थी।

इसके पहले जो भी वहाँ गया, क्या उसके पास वहाँ जाने का रास्ता था? वह कौन-सा रास्ता था? तलघर में उतरने का उसका क्या तरीका था? तलघर में जाने का रास्ता उतरकर ही हो सकता था। पहले उड़कर उतरे थे। क्या रस्सी के सहारे उतरा जा सकता है? पानी का रास्ता बरसात के दिनों में बन्द रहता होगा। बाकी दिनों का रास्ता कहाँ है? टपकने वाले पानी के भी बहने का कोई पतला छोटा रास्ता होगा। परन्तु, तराशे कक्ष में कहीं भी गीलापन नहीं था और टपकने की आवाज़ हमेशा आती थी।

इस बार पहाड़ पर चढ़ते हुए बोलू की नज़र ऊँचाई पर एक सफेद चट्टान पर पड़ी। उसे एकबारगी लगा कि यह परतदार चट्टान भी है। अब वे उसकी तरफ बढ़ने लगे। जब कुछ पास पहुँचे तो वह सफेद चट्टान पत्थर की किताब की तरह लग रही थी। और उसमें जो परतें थीं वे शायद किताब के पन्ने हों। किताब खुली हुई नहीं बन्द दिख रही थी। एक पत्थर की टेबल जैसी काली चट्टान के कोने पर रखी किताब। उसके सामने काली चट्टान की स्टूल भी थी। बोलू और कूना उसके पास पहुँच गए। स्टूल बड़ी थी। उस पर कोई असाधारण ही बैठ सकता होगा। बोलू पास की चट्टान से स्टूल वाली चट्टान पर कूदा। जैसे ही बोलू स्टूल वाली चट्टान पर बैठा, हवा चलने लगी थी। जैसे किसी ने बटन दबाकर हवा को चालू कर दिया हो। बोलू ने टेबल पर अपना हाथ रखा। उसने धीरे-धीरे अपनी

उँगलियों को किताब की तरफ बढ़ाया। कूना, बोलू के पास खड़ी थी। उसका हाथ बोलू के कँधे पर था। टेबल जैसी चट्टान का विशाल चौरस पत्थर, स्टूल से थोड़ा ही ऊँचा था। पत्थर का यह एक-एक पन्ना बोलू के वज़न के बराबर होगा। किताब के पन्ने किसी धातु मिले पत्थर के बड़े छल्ले से गुँथे थे। बोलू का इरादा किताब की मोटी जिल्द को पलटाकर देखने का था। हवा तेज़ चल रही थी। पेड़ों के हरहराने की आवाज़ आने लगी थी। देखने से लगता था कि बोलू कहीं खो गया। बोलू ने किताब को छुआ। उसने जिल्द को उठाने का प्रयास अपनी उँगलियों से किया, तभी हवा का एक तेज़ झोंका आया और ऊपर की जिल्द ऊपर उठ गई। पता नहीं बोलू के जिल्द पलटाने की यह कोशिश थी या हवा के झोंके से जिल्द उठी थी। किताब का पन्ना कोरा था। पर ऐसा ज़रूर था कि बोलू की खुद की कोशिश से किताब का खुलना असम्भव था। यह भी हो सकता है कि किताब के खुलने में किताब का भी सहयोग हो। बोलू ने अपना हाथ खींच लिया। हवा थम गई थी। उठी हुई जिल्द तभी धप्प से नीचे गिर गई। किताब के बन्द होने से दबती हवा निकलकर बोलू के चेहरे पर पड़ी। इस हवा में किताब के कई सालों से बन्द होने की गन्ध भी थी।

वैसे हवा हर जगह हमेशा तैनात रहती है। लगता है इस जगह पन्ना खोलने में मददगार की तरह हवा को तैनात किया गया था कि कभी बोलू आएगा। जो आएगा उसके लिखने के लिए हवा भी हमेशा के लिए तैनात की गई थी। और बोलू आया भी इसी तरह से था कि उसे एक दिन यहाँ आना ही था। बोलू जहाँ भी जाता था एक दिन उसे वहाँ जाना ही था की तरह जाता। और यह जाना जैसे पहले से निश्चित रहता था।

बोलू अब लौटने के लिए पत्थर की स्टूल पर खड़ा हो गया था। हवा फिर ज़ोर की चली। इस बार पेड़ के हरहराने की आवाज़ के साथ पत्थर की किताब के पन्नों की फड़फड़ाहट भी थी। जैसे किताब बोलू को रोकने के लिए फड़फड़ा रही हो। फड़फड़ाने की आवाज़ कभी पत्थर के टकराने की, कभी हवा से टकराने की आवाज़ जैसी थी। अकेली कोरी किताब आधी चीज़ होती है। अकेली लिखी किताब भी आधी चीज़ होती है। उसके पास कोई न कोई लिखने या पढ़ने वाला होना चाहिए।

कई बार लगता है कि शायद ठीक जगह पहुँचने का एक ही रास्ता हो। बौना पहाड़ में एक निश्चित जगह जाने निकलते हैं और दूसरी जगह पहुँच जाते हैं। कुछ जगहें होती हैं जहाँ जितनी बार जाओ तो लगता है पहली बार पहुँचे। ऐसा लगने का सम्बन्ध याददाश्त से भी है कि भूल गए कि यहाँ कभी आए थे। एक से दिखने वाले जुड़वों में किसी एक से मिले। फिर दूसरे से मिले। तो लगे उसी से दूसरी बार मिले। जहाँ जाना है का एक रास्ता सबको मालूम हो गया, तो दूसरे रास्ते के बारे में कोई सोचे भी क्यों?

कूना ने कहा, “लौटने के रास्ते में इस बार पहचान के लिए चट्टानों में निशान लगाते चलते हैं।”

बोलू ने कहा, “यह ठीक नहीं होगा। उसी जगह पहुँचने निकलो और दूसरी जगह पहुँच जाना कई बार अच्छा होता है। जैसे इस बार अच्छा हुआ। हम पूरी पृथ्वी से तो परिचित नहीं हो सकते। बौना पहाड़ तक को जानना बचा है।”

बोलू इस तरह से बोल रहा था जैसे बोलू नहीं किसी दूसरे ने कहा।

बचपन में भटकने वाले रास्ते अच्छे लगते हैं। रास्ता ढूँढना भी अच्छा लगता है। जहाँ पहुँचना है उसके जितने रास्ते मिल जाएँ, अच्छा है। और यही हुआ। जब मित्रों के साथ दुबारा पत्थर की किताब तक पहुँचने की उन लोगों ने कोशिश की तो वे वहाँ पहुँच नहीं पाए।

बौने पहाड़ को चारों तरफ देखें, वह एक जैसा दिखता है। अगर केवल बौने पहाड़ को देखते हुए चारों दिशाओं को ढूँढें तो दिशाएँ खो जाएँगी। और हम किस दिशा में खड़े हैं इसे जानने के लिए आकाश की तरफ देखना पड़ेगा। बच्चे बड़े होते जाते हैं और बौने पहाड़ पर भूल-भुलैया भी बढ़ती जाती थी।

बजरंग होटल का पिछवाड़ा बौना पहाड़ से सटा था। एक दिन भैरा ने बताया, “आज से बौना पहाड़ बजरंग होटल से लगता है कुछ दूर चला गया।”

“ऐसा कैसे हो सकता है? और क्यों होगा? क्या बजरंग महराज से बौने पहाड़ का झगड़ा हो गया? पहाड़ कैसे दूर जाएगा? वह बड़ा भारी है। होटल दूर हुई होगी।” यह मिला-जुला सबका स्वर था।

थी पहेली:

एक-

पहाड़ अगर दौड़ता
तो उसका एक कदम
हज़ार साल में उठता
और भारी-भरकम पहाड़
अपने एक कदम से
चींटी का एक कदम बढ़ाता
पहाड़ कभी इसीलिए
चींटी के साथ नहीं दौड़ता
तो बताओ चींटी
यदि दो कदम दौड़े
तो पहाड़ रहेगा हज़ार साल पीछे
या दो हज़ार साल पीछे?

दो-

एक लाइन में बौना पहाड़ दौड़े
और लौटे बार-बार
उसके हर उठे कदम के नीचे
एक-एक चट्टान कोई रखता जाए
तो बौना पहाड़ एक श्रेणी में बड़ा हो जाए।
क्या उसे बाबूलाल महराज का
मीठा समोसा भी खिलाया जाए?

भैरा ने कहा, “पहाड़ का दूर होना उस दिन की घटना के बाद हुआ, जिस दिन पानी बहुत गिरा था। नीचे की ज़मीन खिसकने से पहाड़ खिसक गया या कुछ बह गया।”

कूना ने कहा, “बजरंग होटल भी तो खिसक सकती है।”

भैरा ने कहा, “बजरंग होटल को मैंने पहले से बाँध दिया था। इसलिए नहीं खिसकी।”

चन्दू ने पूछा, “किससे बाँध दिया?”

भैरा ने कहा, “ज़मीन में खूँटा गाड़कर होटल को बाँध दिया।”

बोलू ने कहा, “होटल तो खिसकी होगी, ज़मीन के खिसकने से?”

भैरा ने कहा, “ज़मीन भी खूँटे से बँधी है।”

बोलू ने कहा, “खूँटे से पहाड़ को भी बाँध देना था।”

भैरा ने कहा, “आज बाँध दूँगा।”

भैरा को ऐसा लगा कि उसकी बात को सबने गम्भीरता से लिया है। उसे कुछ दिनों से लग रहा था कि उसके पास बताने लायक कुछ रहता नहीं। उसे कुछ करना चाहिए जैसे बोलू और कूना करते हैं।

इसके बाद सब भैरा के साथ बौना पहाड़ का खिसकना देखने गए। होटल के पिछवाड़े से बाहर तक आई एक रस्सी थी जो ज़मीन पर गड़े खूँटे से बँधी थी।

# नीली की नज़र में रक्षा बन्धन

बात 2016 की है। मुम्बई में रहने वाली दस साल की नीली से ट्यूशन टीचर ने रक्षाबन्धन पर एक लेख लिखने को कहा। उसके लेख में हिज्जे की कई गलतियाँ थीं मगर टीचर ने उसे दस में दस अंक दिए। तुम भी पढ़ो उसने क्या लिखा।

रक्षाबन्धन एक हिन्दू का त्योहार है। हिन्दू लोग इस त्योहार को धार्मिक मानते हैं।

इस त्योहार पर एक बहन उसके भाई को एक राखी बाँधती है। राखी सिर्फ एक रंगीन धागा होता है। एक बहन उसकी खुद की रक्षा कर सकती है, फिर भी उसे राखी बाँधनी पड़ती है।

मैं तो मेरे भाई को एक मारकर, राखी और उपहार देकर खत्म कर देती हूँ। मुझे मेरे भाई से बहुत-से तौफे मिलते हैं। एक आइ-पैड भी मिला है।

ये लोगों को पता होना चाहिए कि लड़की खुद की रक्षा कर सकती है। तो भी, हमें तौफे मुफ्त में मिलते हैं!

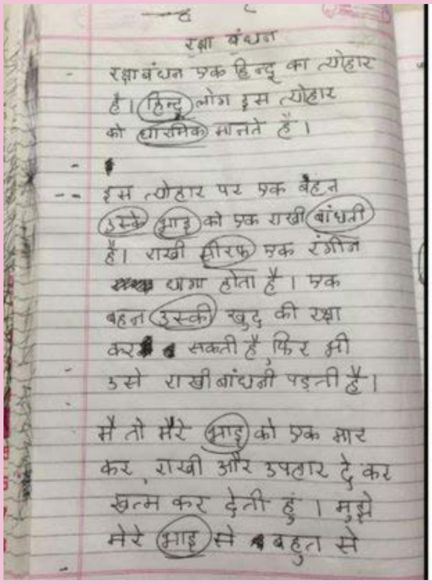


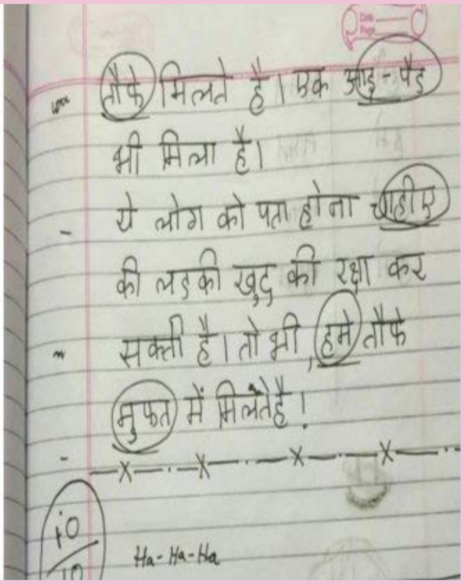

# सावन

## झूला, भुजरिया, भेजा और डढ़ैर

गिरजा कुलश्रेष्ठ
चित्र: अबीरा बन्धोपाध्याय

उन दिनों पहली वर्षा का मतलब हमारे लिए सावन का आना हुआ करता था और सावन का मतलब... झूला। पहली वर्षा के साथ ही उधर जुताई-बुवाई के लिए किसान अपने हल, बैल लेकर खेतों की ओर निकल पड़ते और हम झूला डालने के लिए रस्सी और पटली (लकड़ी की तख्ती) टाँड़ से उतारने की गुहार लगाते। लेकिन माँ का सख्त निर्देश था कि हरियाली अमावस्या तक रस्सी और पटली का नाम तक नहीं लिया जाएगा। दादी कहती थीं कि इससे पहले जो 'पटुली' पर बैठेगी उसके बड़े-बड़े फोड़े निकल आवेंगे।

इसलिए भले ही आषाढ़ की पहली बारिश से लेकर सावन की पहली चतुर्दशी तक बादल उमड़-घुमड़कर, बिजली चमक-बमककर, मोर-पपीहा पुकार-पुकारकर और आम-नीम की डालियाँ झूम-झूमकर झूलने के लिए बुलातीं, पर हम मन मारकर हरियाली अमावस्या के दिन का इन्तज़ार करते।

वह दिन हमारे लिए बहुत खास होता। मेंहदी के हरे पत्तों को सिलबट्टे पर पीसना, रसोई से निकलकर शुद्ध देशी घी की महक का दूर गली में फैल जाना। पूरी, हलवा, पुए या अन्य पकवान बनने का मतलब कोई खास त्यौहार ही होता था। टाँड़ पर सालभर से बन्धक बनाकर रखी गई रस्सी और पटली नीचे उतार ली जाती। द्वार के आगे चबूतरे पर खड़े नीम की शाखों में माँ झूला डाल देतीं। हम लोग कभी अकेले तो कभी दो मिलकर झूलते थे। दो का मिलकर झूलना बहुत मज़ेदार होता। एक बैठता नीचे झूले पर, पाँव ज़मीन छूते हुए। दूसरा झूला पहले से कुछ ऊँचा होता। दूसरा उस पर कुर्सी की तरह बैठकर अपने पैरों को साथी की पटली पर रख रस्सी में अँगूठा फँसा लेता ताकि दोनों जुड़े रहें। इसे हम अंगी–पंगी बोलते थे। मज़ा तो तब आता जब पेड़ की टहनियों को छूने और पत्ते तोड़ लाने की होड़ में पींगें बढ़ाई जातीं कि कौन कितना ऊँचा झूलकर पेड़ की टहनी को छूकर आए। नीचे वाला पटली पर खड़ा होकर रमक बढ़ाता, बढ़ाता जाता, लगता कि हवा में उड़ रहे हैं। आखिर ऊँचे झूले पर बैठा साथी विजयी भाव से टहनियों को छू ही लेता बल्कि पत्ते भी तोड़ लाता। छोटी लड़कियाँ गातीं...

*"बाजरे के खेत में चिरैया चूँ-चूँ कर रई हैं*
*उतते आए केशव भैया क्या सौदा लाए जी*
*आप कों घुड़िला बाप कों घुड़िला मैया कों बेसरि लाए जी*
*छोटी बहन को चुनरी लाए मोती तार जड़ाए जी"*

उधर मौसी और दीदियाँ बाग से मेंहदी के हरे पत्ते ले आतीं और सिलबट्टे पर पीसतीं। मेंहदी की महक गली तक फैल जाती। पीसते-पीसते उनके हाथ भी रच जाते तो खुश होकर खूब खिलखिलातीं। चारों ओर मल्हारें गूँज उठतीं... तब लगता था कि सावन, बिलकुल सामने आ खड़ा है द्वार पर। पन्द्रह रातें गीतों–मल्हारों की मीठी गूँज से क्रमशः उजली होती जातीं।

अब भुजरिया (स्थानीय भाषा में 'पन्हौरा') के बारे में बताती हूँ। छलनी से छानी हुई मिट्टी, राख और गोबर का चूरा मिलाकर एकसार किया जाता, फिर उसे मिट्टी के बर्तन में बिछाया जाता। उसमें गेहूँ या जौ के दाने बिखेरकर मँजे हुए पात्र में शुद्ध पानी डालकर उसे अँधेरे में रख दिया जाता। घर में जितनी लड़कियाँ होतीं उतने ही भुजरिया के पात्र तैयार होते और पूर्णिमा तक उन्हें कोई नहीं देख सकता था। पन्द्रह दिन बाद जब उन गमलों में अंकुरों के लम्बे सुनहरे लच्छे लहलहाते देखते थे तो मन गर्व और खुशी से लबालब हो जाता था। भुजरिया जितनी लम्बी और सुनहरी होतीं उतनी ही शुभ मानी जाती थीं। यह अच्छी फसल होने का संकेत माना जाता था।

सावन लड़कियों के माँ के घर आने का त्यौहार है। मैंने देखा है कि गाँव में चाहे बहन भारी जेवरों व कीमती कपड़ों से सजी बुलैरो में बैठकर आए या थैले में एक जोड़ी कपड़ा डालकर, दस-पन्द्रह रुपए के नारियल-बतासे लेकर, भरी बसों में धक्के खाती हुई, कण्डक्टर से दो-चार रुपए के पीछे झगड़ा करके आए, चाहे वह युवती हो या अधेड़ हो (कभी-कभी तो बूढ़ी भी), पर पीहर आने का उल्लास ही अलग होता है। शायद इसलिए कि बाबुल की देहरी पर आकर एक बार फिर बचपन को जीने का मौका मिल जाता है।

सावन की पूर्णिमा के दिन दोपहर भाइयों की कलाइयों पर राखी सजाई जाती हैं और शाम को भुजरिया-मेला। भुजरिया सिराने का उत्सव रक्षा-बन्धन पर्व का सबसे उल्लासमय आयोजन होता है। सन्दूकों में से नए कपड़े निकल आते और सज-धजकर सब भुजरिया सिराने जाते।

गाँव के बिल्कुल करीब ही एक छोटी-सी नदी बहती है। उसी की भरी-पूरी धारा में भुजरियाँ सिराई जाती हैं। सिराने के बाद पल्लू या दुपट्टे के छोर में बँधे हुए गेहूँ रेत में दबाते हुए सहेलियाँ गाती हैं "मैं न रहूँ तो मेरे भैया को यह 'खोंह' (गढ़ा धन) बता देना" यह छोटी-सी परम्परा भाई के लिए बहन के गहरे लगाव का प्रतीक है। कहते-कहते मेरा तो दिल भर आता था। शाम को गाँव के सभी लोग परस्पर घर-घर जाकर लड़कियों से भुजरिया माँगते हैं और पाँव छूकर बदले में कुछ न कुछ भेंट करते हैं।

इधर लड़कियाँ नदी में भुजरिया सिरातीं उधर पुरुष वर्ग में भेजा फोड़ने का आयोजन होता। क्या बच्चे और क्या जवान, सभी उत्साह के साथ सुदूर पीपल वाले मैदान में पहुँच जाते। सबसे ऊँची टहनियों में एक छोटा-सा घड़ा रखा जाता। उसमें बन्दूक से निशाना लगाना होता। विजेता को अच्छा खासा इनाम भी मिलता था। इसलिए निशानेबाज़ी की तैयारी कई हफ्ते पहले शुरू हो जाती थी।

'डढ़ैर' - पता नही इसका सही नाम क्या है पर गाँव में इसी नाम से जाना जाता है। सम्भव है कि यह डाण्डिया का ही परिवर्तित संस्करण हो। इसमें ढोल की ताल पर पन्द्रह से पच्चीस लोग गोल घेरा बनाकर बड़े सधे हुए कदमों से नाचते हैं। हाथों में डण्डियाँ होती हैं जो एक विशेष गति और लय पर आपस में टकराती हैं। समूह के बीच में एक-एक करके लोग नाचते हुए ही कई तरह के बड़े अद्भुत करतब दिखाते हैं। यह नाच दोहा जैसी तुकबन्दियों के साथ होता है जिन्हें गाना भी एक विशेष कला है। हर कोई नही गा सकता। इसकी तैयारी भी हफ्तों पहले से होती है।

*"ओ... बदरा छाए घाट पै रे*
*पछुआ कौ है जोर रे.... ओऽऽऽ*
*इन्दर राजा बरसियो रे...बा धरती के छोर*
*अऊ हे... अऊ हे..."*
*ढमक ढमक ढम ढमक ढमक ढम.... (ढोल)*
*"ओऽऽऽ हरी हरी बालिन हरिया कुतर गए*
*भुस कौं लै गई ब्यारि हो.... ओऽऽऽ...*
*बीज बुअत में ढँगरा मर गयौ टोटे में रह्यौ किरार*
*...अऊ हे ...अऊ हे"*
*ढमक ढमक ढम ढमक ढमक ढम....*
*"ओऽऽऽ मेरौ मेरौ मति करै*
*जग चलती-फिरती बाट हो*
*ओ... हँसि बोलनि में जिन्नगी*
*पड़्यौ रहैगो ठाट हो अऊ हे"*

चक मक

# झण्डे का दिन

-मनीषा ध्रुव, तीसरी
अज़ीम प्रेमजी स्कूल
धमतरी छत्तीसगढ़

कल झण्डे का दिन था। कल हम सुबह-सुबह स्कूल आए थे और झण्डा मंच को सजाए थे। फिर हमने लाइन बनाई। झण्डा फहराया तो सबने जन-गण-मन गाया। फिर तैयार होकर हमने डाँस किया, नाटक किया और बूँदी सेव पकड़े और बस में बैठकर घर चले गए।

# बारिश

-तान्या नेताम, मुस्कान संस्था, भोपाल, म. प्र.

बारिश का महीना शुरू होने लगता है उससे पहले मम्मी घर का राशन भरकर रख देती है। बारिश जैसे ही होने लगती है तब पापा काम पर नहीं जा पाते तो सब्ज़ी–भाजी के ठेले नहीं आते तो सब्ज़ी नहीं बना पाते। फिर आम तोड़ने जाते हैं तो आम की चटनी बनाकर खाते हैं। कभी-कभी राशन खत्म  हो जाता है तो उधार माँगना पड़ता है। दुकानदार मना कर देता है तब लोगों से कर्ज लेते हैं। फिर चुकाते हैं। बारिश में कहीं आना-जाना भी नहीं हो पाता बहुत मुश्किल से काम मिलता है। पूरे महीने घर ही बैठना पड़ता है। पूरा बस्ती कीचड़-कीचड़ हो जाता है। कपड़े-बिस्तर सब गीले हो जाते हैं। सोते हैं तो बारिश टप-टप गिरता है। सुबह होते ही डबरा भर जाता है।

चित्र: शिवानी लालगे, छठवीं, मुम्बई, महाराष्ट्र

# एक कुतिया के चार बच्चे

करन कुमार, आठवीं
रा. उ. प्रा. विद्यालय
खिलाड़िया, उत्तराखण्ड

जब मैं लगभग 8 या 9 बरस का था तब मेरे घर के पीछे एक कुतिया के चार बच्चे थे। बहुत छोटे और प्यारे-प्यारे थे। वे लकड़ी के ढेर में छिपे थे। उस दिन बारिश आ रही थी तब कुत्ते की माँ उनको छोड़कर खाने की तलाश में चली गई। मुझे उन बच्चों पर बहुत दया आई। मैं उनको अपने घर ले आया। और मैंने उसके पास खाना-पानी रख दिया। उनकी माँ अपने बच्चों को ढूँढती रही। एक-दो दिन मैंने उन्हें अपने पास ही रखा। फिर उनकी माँ आ गई और अपने सब बच्चों को अपने साथ ले गई। उनकी हालत देखकर मुझे उन पर बहुत दया आती। मेरे मन में बस एक ही ख्याल उठता था काश मेरी माँ मुझे नही डाँटती तो मैं उनके रहने के लिए एक छोटा-सा कोना बना देता। वो जिस लकड़ी के ढेरे में छुपे थे वह कोना आर-पार दिखाई देता था। फिर एक दिन जब बारिश आने वाली थी तब मैं बहुत सारे पुराने कपड़े जहाँ कुत्ते रहते थे वहाँ ले जाकर डाल दिया। तब वो आसानी से बारिश से बच सके। और मैं बहुत खुश हुआ।

चित्र: खेवना आर शाह, सातवीं, बाल भवन, वड़ोदरा, गुजरात

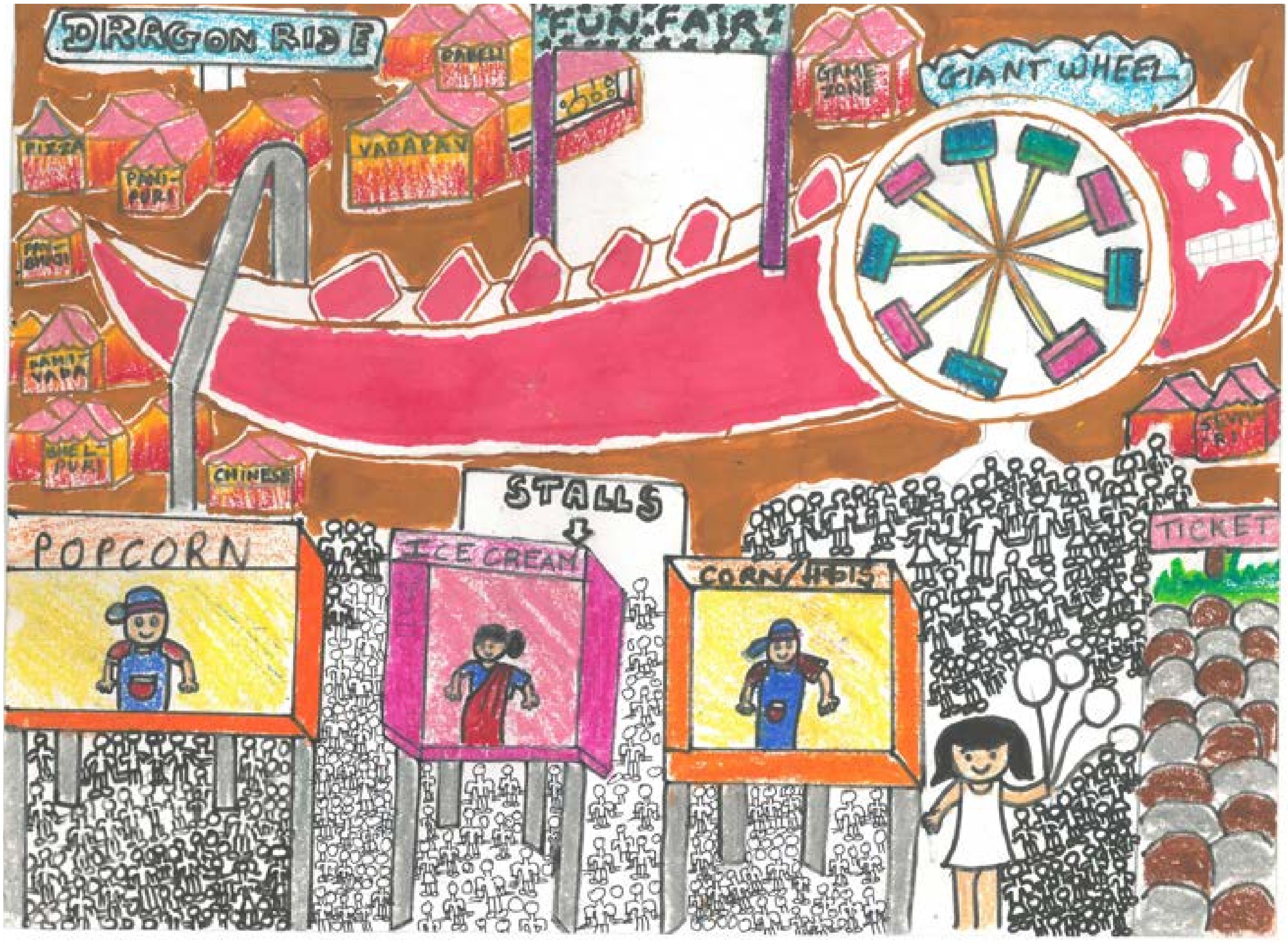

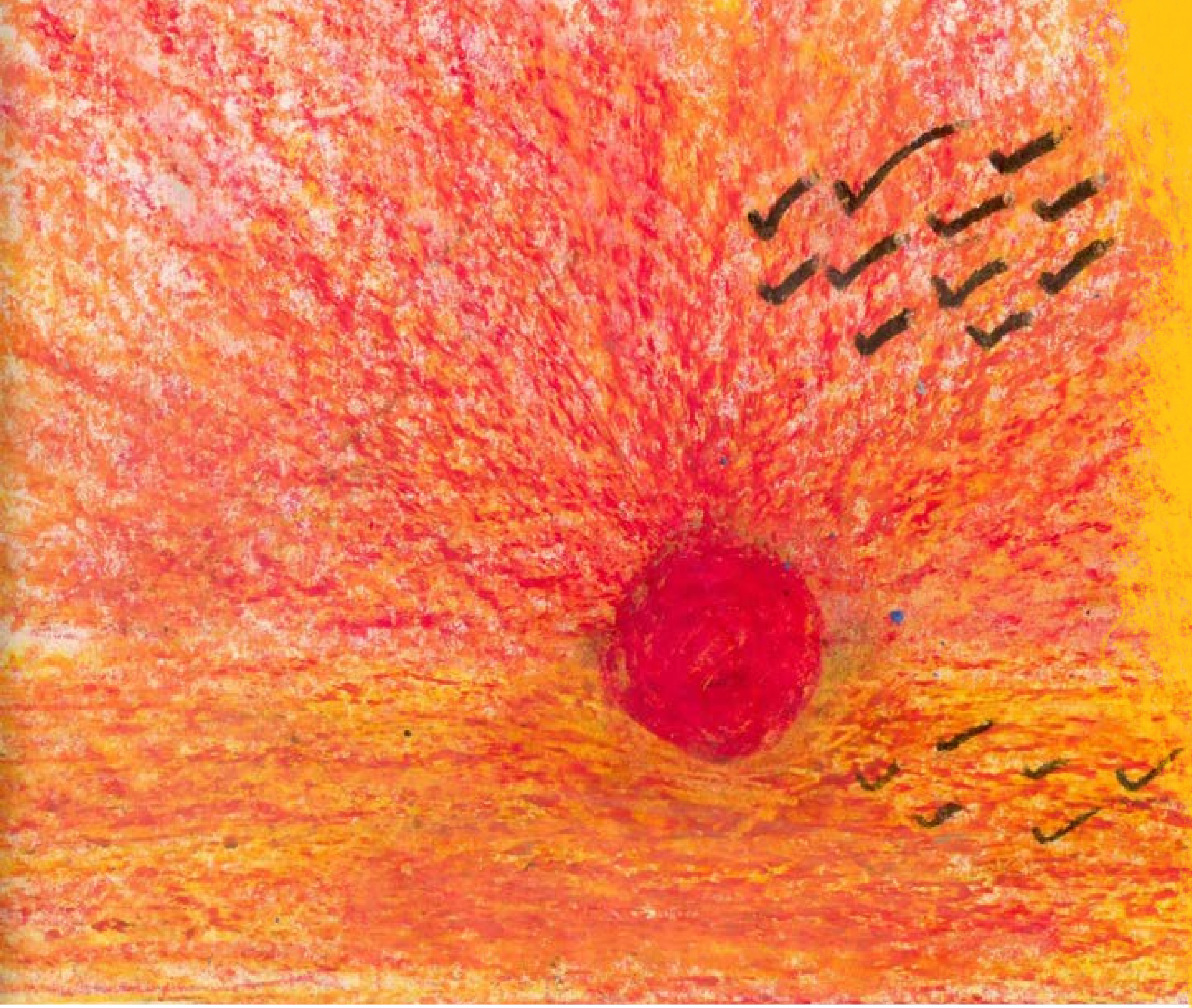

चित्र: आकांक्षा, पाँचवीं, अक्षर निकेतन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

# अप्पू और पप्पू

महक पाल
पाँचवीं, शा. प्रा. शाला
कीरत नगर, भोपाल, म. प्र.

एक जंगल था। उस जंगल में एक हाथी और एक हथिनी रहते थे। और उनके दो बच्चे थे। एक बच्चे का नाम था अप्पू और दूसरे का नाम था पप्पू। वो दोनों खेल रहे थे कि अचानक उनके पापा ने बुला लिया और कहने लगे कि इस जंगल में एक खण्डहर है। वहाँ बन्दर रहते हैं। वहाँ तुम दोनों कभी मत जाना। यह कहकर वो चले गए। अप्पू ने कहा चलो पप्पू हम खण्डहर में चलते हैं पप्पू ने मना कर दिया। अप्पू बोला मैं तो चला। पप्पू बोला कि चलो मैं भी चलता हूँ। वो खण्डहर पहुँच गए। उन दोनों को बन्दरों ने घेर लिया। फिर पप्पू बोला मैंने कहा था ना मत जाओ। अप्पू ने बन्दरों से कहा हमें छोड़ दो। हमारे मम्मी-पापा हमें ढूँढ रहे होंगे। बन्दरो ने अप्पू-पप्पू को नहीं छोड़ा। और धीरे-धीरे शाम हो गई। फिर अप्पू-पप्पू के पापा खण्डहर में आ गए। अप्पू-पप्पू के पापा ने बन्दरों से कहा इन्हें छोड़ दो नहीं तो तुम्हें पता है कि मै तुम्हे अपने पैर से कुचल दूँगा। बन्दरों ने अप्पू-पप्पू को छोड़ दिया। फिर अप्पू-पप्पू और उनके पापा घर चले गए।

चित्र: नियति सोनी, पांचवीं, सरदाना इंटरनेशनल स्कूल, देवास, म. प्र.

# उलटी-सुलटी पढ़ाई

कोमल
सातवीं, आरोही बाल संसार
ग्राम सतोली, नैनीताल, उत्तराखण्ड

उलटी-सुलटी पढ़ाई
जो कभी ना मुझको भाई
हो जाती हूँ मैं तंग
जब बैठूँ किताबों के संग
मम्मी कहतीं पढ़ ले बेटी
ले ले थोड़ा ज्ञान
पढ़-लिखकर जब थक जाएगी
कर लेना आराम
मैं कहती माँ मुझे सुला दो
दिन में मैं पढ़ लूँगी
तंग हो जाती हूँ मैं इससे
फिर भी कोशिश करूँगी
ये उल्टी-सुलटी पढ़ाई
जो कभी ना मुझको भाई

चित्र: शंकर नेताम, सातवीं, इमली महुआ स्कूल, छत्तीसगढ़

तुम भी बनाओ

# बोतल की नाव

बारिश के मौसम में गरमा-गरम भुट्टे के अलावा एक और चीज़ में मज़ा आता है। वो है कागज़ की नाव चलाने में। पर इस बार क्यों न थोड़ी अलग नाव चलाई जाएँ?

सामग्री: प्लास्टिक की बोतल, स्ट्रॉ, गुब्बारा, गोंद और टेप

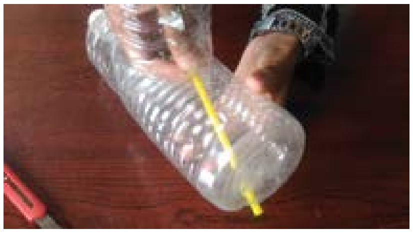

## पानी से चलती नाव

एक बड़ी बोतल को लिटाकर बीच में एक ऐसी छेद काटो (चित्र -1) जिसमें दूसरी बड़ी बोतल फँसाई जा सके। जुड़वा बोतलों को इस बड़ी बोतल के दाएँ और बाएँ गोंद और टेप से चिपका दो। ये एक-दूसरे की विपरीत दिशा में होनी चाहिए ताकि नाव का बैलेंस बना रहे (चित्र - 2)। दूसरी बड़ी बोतल को दो हिस्सों में काटो। निचले हिस्से की तली से एक इंच ऊपर छोटा-सा छेद कर दो। स्ट्रॉ को इसमें फँसाकर छेद को टेप से बन्द कर दो ताकि पानी न निकल पाए (चित्र - 3)। फिर इसे पहली बड़ी बोतल में बने छेद में फँसा दो। पहली बोतल की तली में एक छेद कर दो ताकि स्ट्रॉ बाहर निकल जाए (चित्र - 4)। इस छेद पर भी टेप लगा देना ताकि पानी अन्दर न घुस सके।

नाव तैयार! नाव को पानी में रखकर बीच में लगी आधी कटी बोतल में मग्गे से पानी डालो और देखो क्या होता है।

## हवा चली तो नाव चली

जुड़वा बोतल (समान आकार की दो बोतलें) लो और दोनों को टेप से चिपका दो (चित्र - 1)। अब इन जुड़वा बोतलों को लिटा दो। अब इनसे छोटे आकार वाली एक और जुड़वा बोतल लो। छोटे आकार वाली जुड़वा बोतलों को बड़ी जुड़वा बोतलों की तली पर खड़ा कर चिपकाओ (चित्र - 2)। स्ट्रॉ के एक सिरे पर गुब्बारे का मुँह पहले गोंद से फिर टेप से चिपका दो। अब इस स्ट्रॉ को छोटी जुड़वा बोतलों के बीच फँसाकर इसे भी अच्छी तरह से चिपका दो (चित्र - 3)। लो, नाव तैयार! इसे पानी में रखो और स्ट्रॉ के खुले सिरे से गुब्बारे को फुलाओ। देखो फिर क्या होता है?

फोटोग्राफ: इशिता देबनाथ बिस्वास

मध्यप्रदेश शासन, ऊर्जा विभाग

# मुख्यमंत्री जन-कल्याण (संबल) योजना

# "सरल बिजली बिल" एवं "मुख्यमंत्री बकाया बिजली बिल माफ़ी स्कीम"

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

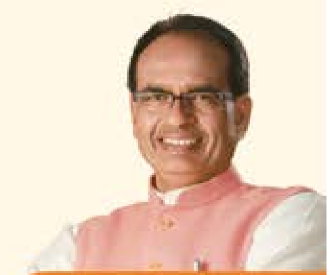

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

**योजना में शामिल होने के लिए कोई शुल्क नहीं देना है**

मुख्य बिन्दु

## सरल बिजली बिल स्कीम

- संबल योजना में पंजीकृत श्रमिक, जिनका विद्युत भार 1 किलोवॉट तक है, इस स्कीम के पात्र होंगे।
- पंजीकृत श्रमिकों से पंजीयन प्रमाण-पत्र की प्रति नहीं मांगी जायेगी, मात्र पंजीयन क्रमांक, समग्र आई.डी. क्रमांक आवेदन पत्र में भरना होगा। श्रमिकों का कनेक्शन न होने पर बिना कनेक्शन प्रभार लिये (निःशुल्क) विद्युत कनेक्शन दिया जाएगा।
- इस स्कीम में शामिल होने के लिये कोई अंतिम तिथि नहीं है।
- पात्र हितग्राहियों को आवेदन, निकटतम विद्युत वितरण केन्द्र के कार्यालय में जमा करना होगा।
- स्कीम में 1000 वॉट तक के संयोजित भार वाले घरेलू श्रेणी के उपभोक्ता शामिल होंगे, किन्तु एयर कंडीशनर एवं हीटर का उपयोग करने वाले उपभोक्ता पात्र नहीं होंगे।
- उपभोक्ता से प्रतिमाह मात्र 200 रुपये अथवा विगत वर्ष भर के मासिक औसत बिल की राशि, जो भी कम हो, ली जाएगी।
- जहां मीटर स्थापित है, वहां मीटर रीडिंग के आधार पर बिल जारी किया जाएगा।
- सरल बिजली बिल में उपभोक्ता द्वारा देय राशि तथा राज्य शासन द्वारा प्रदत्त सब्सिडी का स्पष्ट उल्लेख होगा।
- जहाँ पात्र हितग्राही विद्युत उपभोक्ता के परिवार का सदस्य है एवं साथ में निवासरत है और उसका नाम समग्र आई.डी. में परिवार के सदस्य के रूप में विद्युत उपभोक्ता का नाम अंकित है, तो इसी विद्युत संयोजन पर स्कीम का लाभ मिल सकेगा।

## मुख्यमंत्री बकाया बिजली बिल माफ़ी स्कीम

- इस स्कीम में संबल योजना में पंजीकृत श्रमिकों के साथ बी.पी.एल. उपभोक्ता पात्र होंगे।
- हितग्राहियों को विद्युत वितरण कंपनी के निकटतम कार्यालय में निर्धारित प्रपत्र में आवेदन करना होगा। आवेदन पत्र का कोई शुल्क नहीं होगा।
- आवेदन पत्र में मात्र श्रमिक पंजीयन क्रमांक, समग्र आई.डी. क्रमांक/बी.पी.एल. कार्ड क्रमांक तथा सहयोगी दस्तावेज आधार नंबर, मोबाइल नं. भरना होगा। इनकी कोई छायाप्रति नहीं देनी होगी।
- पात्र हितग्राहियों के घरेलू संयोजन पर माह जून 2018 तक की कुल बकाया राशि माफ की जाएगी तथा बिल माफी का प्रमाण-पत्र दिया जाएगा।
- योजना में वे उपभोक्ता भी शामिल हो सकेंगे, जिन पर विद्युत वितरण कंपनी द्वारा विद्युत अधिनियम की धारा 126, 135 अथवा 138 के तहत प्रकरण दर्ज है।
- यदि पात्र हितग्राही विद्युत उपभोक्ता के परिवार का सदस्य है एवं उपभोक्ता के साथ निवास करता है, तो ऐसे विद्युत संयोजन पर स्कीम का लाभ मिलेगा।

## अपेक्षित प्रश्न एवं उनके समाधान (FAQ's)

**प्रश्न :- योजना में शामिल होने के लिये आवेदन पत्र कहां से प्राप्त किया जा सकता है ?**

उत्तर :- नजदीकी जोन/वितरण केंद्र से आवेदन पत्र निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के उपभोक्ता कंपनी की वेबसाइट www.mpcz.co.in से, पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के उपभोक्ता www.mpez.co.in से एवं पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के उपभोक्ता www.mpwz.co.in से डाउनलोड कर सकते हैं।

**प्रश्न :- योजना का लाभ लेने के लिये आवेदन कहां जमा किया जाये ?**

उत्तर :- पात्र हितग्राही उपभोक्ता संबंधित जोन/वितरण केंद्र/पंचायत/शिविर में आवेदन देकर योजना का लाभ ले सकते हैं।

**प्रश्न :- यदि किसी श्रमिक के पास श्रमिक कार्ड उपलब्ध नहीं है, तो क्या आवेदन दिया जा सकता है ?**

उत्तर :- श्रमिक द्वारा श्रमिक कार्ड हेतु पंजीयन कराया है परंतु श्रमिक कार्ड उपलब्ध नहीं है तो समग्र कार्ड लेकर आयें।

**प्रश्न :- क्या आधार कार्ड क्रमांक, मोबाइल नंबर या विद्युत देयक की प्रति नहीं लाने पर आवेदन स्वीकार किया जाएगा।**

उत्तर :- हाँ। किंतु इन्हें लाने पर हितग्राही/उपभोक्ता को सुविधा होगी तथा सूचनायें भी प्राप्त होती रहेंगी।

**प्रश्न :- क्या योजना का लाभ लेने के लिये उपभोक्ता को प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होना आवश्यक है ?**

उत्तर :- हितग्राही को स्वयं उपस्थित होना चाहिए किंतु हितग्राही के बीमार या बाहर होने पर परिवार के सदस्य आवेदन-पत्र जमा कर सकते हैं।

**प्रश्न :- एक ही परिवार में एक से अधिक श्रमिक पंजीकृत होने पर किसको लाभ दिया जायेगा ?**

उत्तर :- परिवार के उस सदस्य, जिसके नाम पर कनेक्शन है, को हितग्राही के रूप में योजना का लाभ दिया जाएगा।

**प्रश्न :- यदि श्रमिक के नाम से कनेक्शन नहीं है तो क्या आवेदन दिया जा सकता है ?**

उत्तर :- यदि कोई पात्र हितग्राही, विद्युत उपभोक्ता के परिवार का सदस्य है एवं उपभोक्ता के साथ ही निवासरत है साथ ही समग्र परिवार आई.डी. में दोनों के नाम हैं, तो योजना का लाभ दिया जाएगा।

**प्रश्न :- क्या श्रमिकों को दोनों में से किसी एक ही योजना का लाभ दिया जायेगा ?**

उत्तर :- पात्र श्रमिकों को दोनों योजना का लाभ दिया जाएगा।

**प्रश्न :- श्रमिक यदि अन्य जिले/शहर/राज्य में निवासरत है तो क्या लाभ प्राप्त करने हेतु पात्र होगा ?**

उत्तर :- जिस स्थान पर इस योजना का लाभ लेना है, उस शहर/स्थान पर श्रमिक पंजीयन जरूरी है।

**प्रश्न :- क्या सामान्य वर्ग के लोगों को उक्त योजना का लाभ दिया जायेगा ?**

उत्तर :- सभी वर्गों के पात्र पंजीकृत श्रमिकों को लाभ दिया जाएगा।

**प्रश्न :- पूर्व से सब्सिडी प्राप्त उपभोक्ताओं को भी योजना का लाभ प्राप्त होगा ?**

उत्तर :- जी हाँ, योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन देना होगा।

**प्रश्न :- क्या 1 किलोवॉट से अधिक भार वाले कनेक्शन पर श्रमिक/बी.पी.एल. उपभोक्ता को माफी योजना का लाभ मिलेगा ?**

उत्तर :- हाँ, बिल माफी योजना का लाभ प्राप्त होगा।

**प्रश्न :- बी.पी.एल. उपभोक्ता जिनका श्रमिक पंजीयन नहीं है क्या उन्हें सरल बिल स्कीम का लाभ मिल सकता है ?**

उत्तर :- ऐसे बी.पी.एल. हितग्राही/उपभोक्ता यदि संबल योजना में पात्र हैं, तो संबंधित नगरीय निकाय/ग्राम पंचायत में श्रमिक पंजीयन करा सकते हैं, जिसके बाद उन्हें सरल बिल स्कीम का लाभ मिल सकेगा।

**अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें**

| विद्युत वितरण कंपनी का नाम | कॉल सेंटर नम्बर | वाट्स एप नं. (केवल संदेश हेतु) | लैण्डलाइन नम्बर |
|---|---|---|---|
| मध्य क्षेत्र | 18002331912 | 9406902479 | 0755-2551222 |
| पूर्व क्षेत्र | 18002331266, 1912 | 9425807257 | 0761-2665906, 2665094 |
| पश्चिम क्षेत्र | 1912 | 9754800001 | 0731-2426395 |

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

विज्ञापन DI7004 09/07/2018

# माप पाधी

1. इवा अपने स्कूल के लिए गणित का एक प्रोजेक्ट तैयार कर रही है। वह यह दिखाना चाहती है कि एक ही तरह की आकृतियों को आपस में कितने तरीकों से जोड़ा जा सकता है। उसने देखा कि समान माप के दो चौकोरों को केवल एक तरीके से जोड़ा जा सकता है।

समान माप के तीन चौकोरों को जोड़ने के दो तरीके हो सकते हैं।

समान माप के चार चौकोरों को जोड़ने के दो तरीके तो उसने खोज लिए हैं पर वो यह जानना चाहती है कि ऐसा करने के कुल कितने तरीके हो सकते हैं। क्या तुम इसमें उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

2. सारा के पास सात मोमबत्तियाँ हैं जिन्हें उसने एक गोल मेज़ पर लगा रखा है। यह मोमबत्तियाँ कुछ जादुई हैं। इसलिए वह जैसे ही किसी भी एक मोमबत्ती को फूँकती है तो उसके अगल-बगल की दो मोमबत्तियाँ भी अपने-आप बुझ जाती हैं। जब वह किसी बुझी मोमबत्ती को फूँकती है तो वह फिर से जल उठती है और उसके अगल-बगल की मोमबत्तियों की स्थिति भी बदल जाती है। यानी कि अगर वो जली हुई हों तो बुझ जाती हैं और बुझी हुई हों तो जल जाती हैं। सारा इन सातों मोमबत्तियों को बुझाना चाहती है। ऐसा करने के। लिए उसे कम से कम कितनी बार मोमबत्तियाँ बुझानी होंगी?

3. इन चारों में से किस बक्से को धकेलना सबसे आसान होगा?

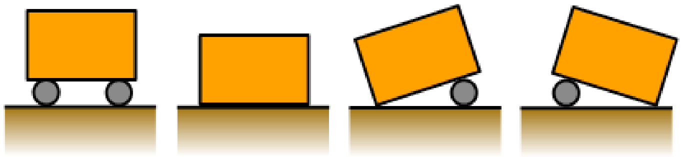

(a) (b) (c) (d)

## फटाफट बताओ कि

एक किसान के पास 17 भेड़ें थीं। उनमें से 9 को छोड़कर बाकी सब मर गईं तो उसके पास कितनी भेड़ें बचीं ?

(9)

एक ऐसी चीज है जो तुम्हें देने से पहले तुमसे ली जाती है?

([illegible])

चौकी पर बैठी एक रानी
सिर पर आग बदन में पानी
चार हैं रानियाँ और एक है राजा
हरेक काम में उनका साझा

(अँगूठा और उँगलियाँ)

वह क्या है जिसे तुम अपने बाएँ हाथ से नहीं पकड़ सकते?

(अपने बाएँ हाथ की कोहनी)

चार खड़े, चार पड़े
बीच में ताने-बाने
पसरे है हर कोई
लम्बी चादर ताने

(चारपाई)

## सुडोकू-10

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | | 6 | 3 |
| 6 | 3 | | | | |
| | | | | 5 | 2 |
| 1 | 2 | | | | |
| | | | | 4 | 6 |
| | 4 | 6 | 5 | | |

## सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको छह डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 6 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है करके तो देखो, जवाब अगले अंक में तुमको मिल जाएगा।

# मानसून ऑफर

## एकलव्य की पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता पर पाएँ किताबों का पिटारा

## बिलकुल मुफ्त !

6 हज़ार रुपए में बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' की आजीवन सदस्यता पर पाएँ 15 सौ रुपए की किताबें मुफ्त!

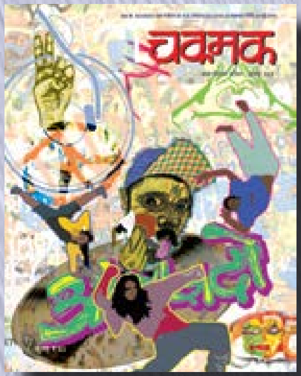


5 हज़ार रुपए में विज्ञान पत्रिका 'सन्दर्भ' की आजीवन सदस्यता पर पाएँ 12 सौ रुपए की किताबें मुफ्त!

**सदस्यता लेने के लिए हमें**

ईमेल/ फोन करें –
sales.chakmak@eklavya.in
8770163516
sandarbh.srote@eklavya.in
9630847498

या

आनलाइन पिटारा शॉपिंग कार्ट www.pitarakart.in का उपयोग करें।
पिटाराकार्ट से स्कीम का लाभ लेने के लिए "**life2018**" कूपन कोड का इस्तेमाल करें !

**चन्दा एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-**
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया भुगतान करने के बाद हमें फोन अथवा ईमेल के ज़रिए ज़रूर सूचित करें।


## माथापच्ची जवाब

1. समान आकार के चार चौकोरों को जोड़ने के पाँच तरीके हैं:

2. सवाल से यह स्पष्ट है कि किसी भी एक मोमबत्ती को दो बार फूँकने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि दो बार फूँकने पर वह मोमबत्ती फिर से जल जाएगी और तीन बार फूँकने का भी कोई मतलब नहीं होगा क्योंकि तीन बार फूँकने पर मोमबत्ती उसी स्थिति में होगी जिसमें पहली बार फूँकने पर थी। यही इस सवाल का हिंट है कि यदि सारा हरेक मोमबत्ती को क्रम से (वह किसी भी मोमबत्ती से शुरुआत कर सकती है) सिर्फ एक बार फूँके तो जब वह सातवीं बार फूँकेगी तब सारी मोमबत्तियाँ बुझ जाएँगी।

3. 6. ए वाले बक्से को।

## सुडोकू-9 का जवाब

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 3 | 2 | 5 | 4 | 6 |
| 4 | 6 | 5 | 1 | 2 | 3 |
| 3 | 2 | 1 | 4 | 6 | 5 |
| 5 | 4 | 6 | 3 | 1 | 2 |
| 2 | 1 | 3 | 6 | 5 | 4 |
| 6 | 5 | 4 | 2 | 3 | 1 |

# चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ ▶
ऊपर से नीचे ▼

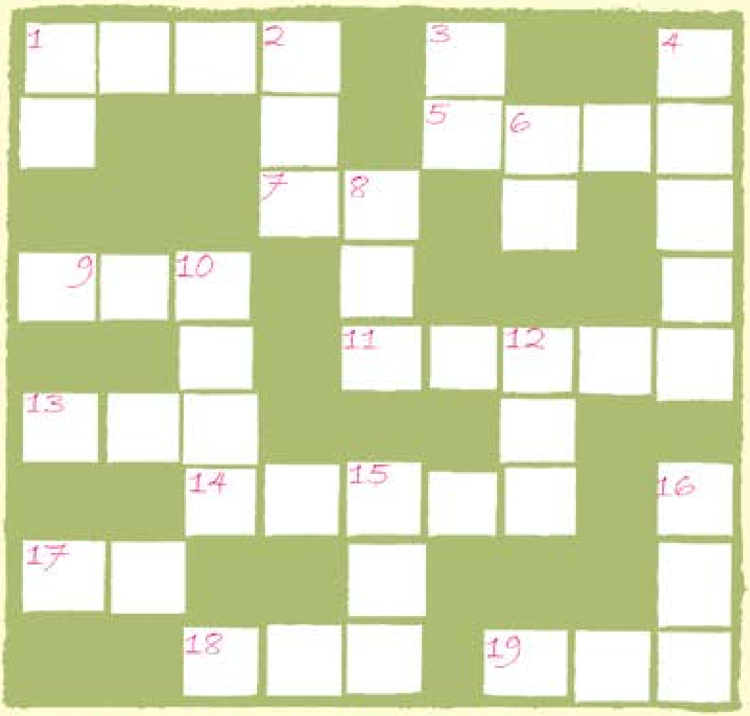

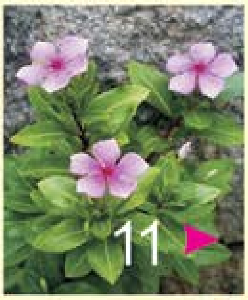

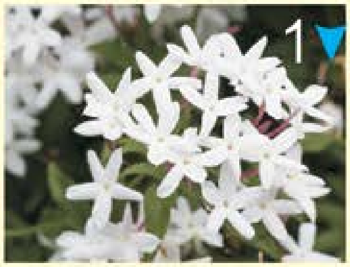

चित्र पहेली डिज़ाइन: दिलीप चिंचालकर

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

# कपड़े सूख रहे हैं

केदारनाथ सिंह

हजारों-हजार
मेरे या न जाने किस के कपड़े
रस्सियों पर टँगे हैं
और सूख रहे हैं

मैं पिछले कई दिनों से
शहर में कपड़ों का सूखना देख रहा हूँ
मैं देख रहा हूँ हवा को
वह पिछले कई दिनों से कपड़े सुखा रही है
उन्हें फिर से धागों और कपास में बदलती हुई
कपड़ों को धुन रही है हवा

कपड़े फिर से बुने जा रहे हैं
फिर से काटे और सिले जा रहे हैं कपड़े
आदमी के हाथ
और घुटनों के बराबर

मैं देख रहा हूँ
धूप देर से लोहा गरमा रही है
हाथ और घुटनों को
बराबर करने के लिए

कपड़े सूख रहे हैं
और सुबह से धीरे-धीरे
गर्म हो रहा है लोहा।

चित्र: शौर्य प्रताप सिंह भाटी
चौथी, विद्या भवन पब्लिक
स्कूल, उदयपुर, राजस्थान

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन